

धर्मरत्न बज्जोत्राय सुख श्री महाबिहार

II-257

हउं नमः श्री हनुकाय ॥ गयस्या त्वरुना धुवे नवनसे विस्तरा सागरे ॥ निमरुनी वमरुमरु
 गुनरुने पादा विद्याने विरोधवक्ता धुसियि नाम संयं मुयमि ४ के लासवान कश्चिग ४ नत्वा गंगुजवा
 दशी गुधयंगस्यादयमधुलंग ॥ मजवं मया धुगमकास्मत्समयरागवा-सर्वगथागराकाय वाक्कि ७
 लहदयवजयागिनि श्रुताष्टविज हाव ॥ गगुरगवानाद ॥ सवगथगतकाय वाक्कि लहदयंग हावकंगु
 श्रानिगु श्रगवंगज हावज गरुसाधूसाधूमहाकृपवामहा वाधिसत्वस्य वजसत्वस्य महासत्वस्य महा

समयसत्वस्य हदयंग व जावंगं गृह ॥ वज गरुउवाव ॥ वजसत्वस्य वत्कस्मात्सदासत्वरवक थं ॥ समयसत्वः
 लवत्कनकथयंगुरगवानपि ॥ ॥ गगवानाद ॥ गजुरगं वजमित्यकंसत्वं गिरवसेकनामज
 नयाय इयायकावजसत्वः ॥ निस्स ग ४ ॥ महानं रसेय ॥ धूमहासत्यगिनिगद्यग गानि त्यं सकी द ॥ ४ ॥ ग
 रगवानाद ॥ गिरवयनि धनासर्वगुगुमहकवर्जि ग ४ ॥ अथ वा सर्वपाथनरावलक्षकाल्यिगा
 ४ ॥ सम्यव रदस्य कथयंग गजालि कालिचन्द्र सूर्यय इयाय धूमसम्हा गीनि म्मा धमहासत्त्वकाय वाक्कि लं ॥ मजवं म

याचकार हलाचनादवी वंकाच हामा मकी सुगा वमका च धपाधु वा दवी या का च ह गा र धी सुगा ग क र्म मूदा ग च म
 मूदा ग म हामूदा ग म हाम मय मूदा गानि म्मा ह व क य मं च गु ४ वा छि द लं ध म्म च क ष्ण द लं ॥ स ह्मा ग च क षा उ ह
 द लं ग म हामूद व च क दार्णि म द लं ग च क सं क्का क म ह च व व ह्म प नं ग च त्वा च ४ क षा ४ ग वि च य वि पा क वि म द नं वि
 ल क षा ह्म गि उ द्ध प स्त वि ज व ४ ग च त्वा य ह्म नि स वा उ य स वा सा ध म ह ध नं र्गि ग च त्वा वि पा ला नि ह्मा नि षा न्द वि
 पा क प र्ध का च वे प्त्था ४ च त्वा वा र द ४ ग मू द म ध्म धि मा ग धि मा गि कं ॥ च गु ना र्थ स ह्मा नि दू ४ व स मू द यानि

२

श धर्मा ग ४ वा च त्वा चि ग त्वा नि म्मा त्म ग लं म न्ता ग लं दे व गा ग लं ह्मा न ग लं ह्म नि ग च त्वा च आ न न्द ४ आ न न्द
 ४ प व मा न न्द ४ वि व मा न न्द ४ स ह्मा न न्द ह्म नि ॥ च त्वा धा नि का या ४ ग ह्मा व वी स च्छि लि वा द ४ सं वृ षि म ह
 सं धी र्गि ग च त्वा सूर्य म्म लि का लि वा उ ह सं कानि ४ च गु र्वा छि द धु ४ दार्णि म न्ता की ग च त्वा च ४ प द ना ४ ग
 वं स र्वा च त्वा च ४ च धु ली क लि गा ना लो द ह्म गि य च ग थ ग गा न् ॥ द ह नी च त्वा च ना दि न्द ह्म हं स व ग ४
 श्री ग स र्वा ग थ ग गा ना का य वा कि ल ॥ ॥ ह व र्वा च त्वा च ४ लो य थ म ॥ १ ॥ ग म न्ता च त्वा च

क्वास्यामशासर्चर्गोतिकवलिमन्त्र४॥ उँ अका वा मूख सर्वधर्माधः॥ माअनृत्य न त्वा गुँ उँ अ ४ कँ रुट् स्वादा
 गगथमगगानां वीजं ॥ नँ अँ जीँ खँ कँ ॥ उँ द व पि च् व ऊँ कँ कँ कँ रुट् स्वादा ॥ ह व ज स्य द्द द यं ॥ स र्च मन्त्र पदा ४
 उँ का वा दि स्वादा क कँ रुट् का व वि दि रि ता ४ ॥ उँ अ क च ट न य य हा स्वादा ॥ पू च का र मन्त्र ४ ॥ या गि नी वी जं ॥ अः
 मा रुँ उँ नी उँ उँ प्प ४ ४ उँ न उँ ज उँ अँ अ ४ दि नु ज स्य ॥ उँ री ला का दा य कँ कँ कँ रुट् स्वादा ॥ च गु नु ज स्य ॥ उँ का
 ल क ल या कँ कँ कँ रुट् स्वादा ॥ व गु ज स्य ॥ उँ कि टि कि टि व उँ कँ कँ कँ रुट् स्वादा ॥ का य वा कि रु अ वि स्वा ३

[illegible]

॥ यत्नं वा वा यत्नं दिक्षि यत्नं विही कृत्वा गमनं नं स्थापयन् वा न स्यात्कटमधु लं वरुयन् ॥ कृष्ण वज्र ४ ॥
 ॥ मन्त्रा नाज्ञा न धासि गन्तुं न जानन्ति वृक्षं न वापी न जज्ञा दधि ता लके न वक्तुं वज्र ४ ॥ मन्त्रा न वक्तुं न वा
 ॥ दधि गन्तुं न जानन्ति वृक्षं न वापी न जानन्ति मन्त्रा नाज्ञा न धासि गन्तुं न जानन्ति वृक्षं न वापी न जानन्ति वृक्षं न वापी न जानन्ति
 ॥ लं वरुयित्वा मन्त्रा न सृजन्तुं न जानन्ति वृक्षं न वापी न जानन्ति वृक्षं न वापी न जानन्ति वृक्षं न वापी न जानन्ति वृक्षं न वापी न जानन्ति
 ॥ लिख्यन्तुं वाग्म्या इत्येव गुह्यं न जानन्ति वृक्षं न वापी न जानन्ति वृक्षं न वापी न जानन्ति वृक्षं न वापी न जानन्ति वृक्षं न वापी न जानन्ति

[illegible]

नविधिः ॥ गायत्रेन विना स्याद्विधिः काचन ॥ वक्ष्ये ॥ गायत्रिं कायिष्ये यमं न कृ भव चिन्तया संद्वे
 णि कं काचन यमं विधिः काचन ॥ वक्ष्ये ॥ गायत्रिं कायिष्ये यमं न कृ भव चिन्तया संद्वे ॥ यत् ॥ मन्त्र
 १ गायत्रिं वक्ष्ये कर्त्तुं विधिः वक्ष्ये ॥ वक्ष्ये ॥ गायत्रिं कायिष्ये यमं न कृ भव चिन्तया संद्वे ॥ यत् ॥ मन्त्र
 लगी वा वक्ष्ये यत् ॥ गायत्रिं वक्ष्ये ॥ वक्ष्ये ॥ गायत्रिं कायिष्ये यमं न कृ भव चिन्तया संद्वे ॥ यत् ॥ मन्त्र
 दवान् स्मृतं यिनु कामन गिलकं साधनीयं ॥ वक्ष्ये ॥ वक्ष्ये ॥ गायत्रिं कायिष्ये यमं न कृ भव चिन्तया संद्वे ॥ यत् ॥ मन्त्र

लयन पीषयत् ॥ गायत्रिं वक्ष्ये ॥ वक्ष्ये ॥ गायत्रिं कायिष्ये यमं न कृ भव चिन्तया संद्वे ॥ यत् ॥ मन्त्र
 रुद्र स्मृतं ॥ गायत्रिं वक्ष्ये ॥ वक्ष्ये ॥ गायत्रिं कायिष्ये यमं न कृ भव चिन्तया संद्वे ॥ यत् ॥ मन्त्र
 गायत्रिं वक्ष्ये ॥ गायत्रिं वक्ष्ये ॥ गायत्रिं कायिष्ये यमं न कृ भव चिन्तया संद्वे ॥ यत् ॥ मन्त्र
 निक्षिपेत् ॥ गायत्रिं वक्ष्ये ॥ वक्ष्ये ॥ गायत्रिं कायिष्ये यमं न कृ भव चिन्तया संद्वे ॥ यत् ॥ मन्त्र
 मय्य मन्त्रि विनु कामन साधनीयं ॥ वक्ष्ये ॥ वक्ष्ये ॥ गायत्रिं कायिष्ये यमं न कृ भव चिन्तया संद्वे ॥ यत् ॥ मन्त्र

नदृष्ट्यगं गामयमूर्तिवनि ॥ ॥ यमदां वनी कर्तुं काम नजल्लभाकार म्यां जल्लभाकार लंगत्वा नका वसं
 परिष्कारयमदनदनरदयन ॥ कामाचिका वसनगिल कं वन्दमनुजपन ॥ ३३ ॥ मकी मदा ४ वजीर वतु स्वा
 दा सन्मय गजाय नागच्छगि ॥ ॥ चन्द्रसूर्यावनी कामन लालिपिष्टक मयं चन्द्रा किक तावजाय मं ॥ ३
 क्षिपनग ३ चन्द्रा कमावल शगिष्ट १ दवजाय कं कं कं रुद्र स्वादा ॥ सय काठिं जयन गिष्ट १ ॥ चन्द्रसूर्या
 नगिदिवा अविष्म सा रवगि ॥ ॥ ३३ ॥ चन्द्रसूर्या विष्म वध विधि ॥ ॥ ३३ ॥ नग नग्युः सनन

मल्लु सविकाल वलायां कमार्या अक्ष साधनायं चक्षुष्य ॥ ३३ ॥ रुद्र सग नारिम यूप्य धूप दीपानां पेवे ॥
 यचाव हसं यं निमल यन ॥ चतुदक्ष्यं अक्ष म्यां वाप्य रानकाल कल्लभादिकं संस्वा योगे लमनज कन सके ॥
 नने वमल्लु सक्षारु व सग वा नारिमल्लु यन ॥ यक्षदारी सकि नावक ३ नमलिष्मत्स वदंगुळं मक्ष
 यित्वा गेल नापिनाया कमार्या दक्षयन वा वद कन ममद वा मपद गमिगिरा नग सा कथयगि ॥ ३३ ॥ मक नगि ॥
 वज्जगि वक्षान रुद्र वा न्वे वध विधि ॥ ॥ ३३ ॥ वक्ष्या वक्ष्या ३ ॥ एक द सी य वा य ग ॥ ३३ ॥ ममा २ ॥ य

कं वाच्यं पत्राय न गडं न लिय न लिय ॐ लूक ग घु प वाय न ॥ ॐ लिमि लि कं कं १०० लूक सूर्य पत्राय न ॥
 धन पाल वेने य द सु न द सु द र्शय न ॥ ॐ न य वाय न ॥ ॥ व का जो वी व क वी य व जे जा कि नी ने व मिः
 कां रू व वी व वी या ग लू क न दि न क व द ती ॥ ॥ म नु य ट ल दि ती य ४ ॥ ॥ द व ग प ट लं ॥
 व्याख्या स्या म त्सा य थ मं ला व य ले ती ॥ दि ती य क नू धां वि ला व य नू ग रू ती य ला व य म् दि ती यं य द्वां स र्च स प न
 ग स्मा त्प न न पि प थ मं नू न ग वा धिं दि ती यं वी ज सं ग दं ॥ रू ती यं वि त्व नि ष्य किं व गु र्थ न्या स म द्वा वं ॥ ॥ ॥

न सूर्य पत्राय वि ला वा सु मि न व वा कं र व वि न्ध व जं ग ने व व क ज वि ला व य च पा का न कं प न व
 न न क ज य थ मं ला व य ले ती कं च र्म धा त्म कं वि द र्श या ती ग स्या य वि मि त्वा दू नू क लं वि ला व य नू ग
 ग न ४ ख द्वा दि ला व य दं दं गं र वं सूर्य म धु लं ग ग ने व दं क गि रे व य द्वा पा य स र ला व कं ग क सु व र्ध म दा य
 वं क ज सं र वं ग व ज व र ट क म धा र्कं न लं वि ला व य नू ग य न ॥ कं का रं य वि न गं द द्वा द्वा त्मा नं वि ला व
 य नू ग व क ज न म दा क सु नी ल प द्वा ज स त्ति ला ॥ अ थ वा नी ला र्ध र के र ला व य क द या व ल ॥ वा मि र द्वा व कं

[illegible]

नृगापि कर्मद्वयकर्मवत्सावगायचैर्मदेलवकु गं ॥ चकीकुलकादि चरुसुचकमयला ॥ यवैवद्विमुद्धान
नगामुडाश्रयकीमरे गा ॥ कृद्वद्विवाश्रवर्मावरोद्विचरुवर्षाकृति ॥ वाभनजकपाचैवद्विवाश्रव
मगशदद्विवाश्रवर्षाकृति ॥ वाभनजकपाचैवद्विवाश्रव
गीत्यनयायूक्या ॥ कर्मज्ञाने र्याश्रिधीयन ॥ चगुर्गुजचगुमावनिर्जितविश्वदिन ॥ यवैवद्विमुद्धान
शयथमं वासं द्युर्गुजननवकपालंदवासूरात्मनकनयविगं ॥ यथमद्विवाश्रवर्षाकृति ॥ वाभनजकपाचैवद्विवाश्रव

इति लिङ्गि मशकज वा वा दीयु इत्येव द्वितीयोऽपि ध्रुव उं निम्बं वामं च कंदोक्षि लवदा नृक्षतं ॥ यं थम मूर्त्तं
 नीलं नग्नं पृष्ठा कवर्धनं पुं गुजा र्यां च धात्र मिना विष्णु द्विष्ट यथम वामं तु ऊं निम्बं वामं द्वितीयं तु
 ऊं च ध्रुव द्विष्टा द्वितीयं तु ऊं कर्त्तिके साक्षात् द्विष्टा र्यां च कर्त्तिके लासमाय र्याय दगु रग वान् नदगु
 युङ्गा म वाच वा कर्त्तिके कया वं ॥ गेधगु कात्म कमृग का कान् सर्वतथ गत काय वा कर्त्तिके द वज्र देव
 गायट लसु गी य ॥ ॥ देव गारिषे क यट वं वा र्या मशस्य ददि स्त वीजा दभी नि ध्या र्या क

बुदी फन या कं भा नात्र या गेधगु क वा वरिष्ठा नान् वृद्धा ना कृष्या ह मा र्ग रि ॥ सं यं चान् नाथ गे ॥
 ऊं गारिषे के गु मां स च वज्र गथा गता रुं रि ॥ गे व द्दे हं वृ का का न नृ पे ॥ ४ य कं मृ गारु न ॥ ४ य कं गथ
 गगात्म के ॥ ४ क लमि ॥ ४ य के रि वी रि मि च ग गारिषे च मा न य द्य वरिष्ठा र्वा रि ॥ दं दू रि ल द्द उ क्क
 नि कं क म वरिष्ठा र्वा रि गान् य वजा दि रि ॥ सं यं च ग वज्र गी र्या ला च ना दि रि वी य ग ॥ गारिषे च मा
 ना मृ द्वि ल वृ ल ल म श वी रि ॥ ४ ग न द नृ का नि ध्या न् ॥ ४ गि स न्धा धि स्त म रा व ना रा र्या रि ॥ ४ नृ ॥ ४ द व

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 गामर्थास्तु गवांशुशिरःकपटलश्च गुथः ॥ २ ॥
 नास्ति वृषं न दद्यात् न हस्तं न पिच्छं न गन्धं न पिष्टं न च नमः न पिपर्सकं न सक्तं न पि
 च्छं न च न चिरं न पिचो रिकां न नीरुगिनी ये वयं यथा विदुः सदा नदी नृज की रथ वजी व ह्म
 ली वाक् सौ गथा यद्वा पाय विधानं न यज्य रुच्य वत्सलं स विरग्या यत्नं न यथा रं दामं जायता
 मग्नुय कियं गदू ४८ वं वा ७ वीरिगिरु च नीशामूढाय के कूलानि यैः विद्वान्ना कु उरुमानि मदाक

वरावज्जोमिरुवेत्सुखयमंनलीनथेवचकुर्मिबुकीसमाख्यानावाक्कीरगधगानिवाचनंयधु
 लिनीइयागपकेमुदाविनिश्चितागधगानांकुलंवेगगसंक्षयह्मीरुधीयगेवागधगायांगनक्षी
 मानागरगच्यगथेवचअनयायइयायूक्तगधगगारिधीयगेगकुलानिषद्विधन्याहृष्टसंक्षपचगु
 पक्षपक्षप्रतिविधंयानिकायवाक्किरुहदनेइकुलानांयकेरगमलेदवीगनिष्ठययकेसगवगभवे
 गचनाक्षीयाभाचइअनानालिकसाधिकइवक्ताविष्णुइमिचइसमीविवृद्धंगत्वमच्यगवावक्तानिर्वृति

गोवृद्धाविषनादिस्तु नृपयगं निवसदा लुकास्याधनं सर्वशर्वात्मनि स्थितं तस्यासत्सर्वगं न तत्त्वके विवृ
 द्वावाचनादगं ॥ दहं सक्तवर्गीयस्मादवगतिनिगद्यं ॥ एतज्जगत्स्य स्त्रीगिवृद्धस्य एगवानिगिकथ्यं ग
 रगानिषदिधन्यावद्ग्रेय्यादिगुह्यं शिवाश्वे अथवा कुंक्ष्मादिमालानां रज्जुनाहं गवानिगि ॥ जननी
 रश्च गयुडाजनयनिगजस्माज्जगज्जिनं गारुगिनीगि गथयुडाविरावंदयगियगश्चकीनिदूहिना
 वनरुकीचयकथ्यं ग ॥ नंजनागुसर्वस्त्वानां वजकीगिरथस्मृगागुह्यस्य दूहनागयुडा ॥ दूहिनाच ॥

११

निगद्यं गानरुकीरश्च गयुडा ॥ च केवलमहाकृप ॥ अस्या जीरावगीयस्मागुं श्रीगस्मान्प्रयकथ्यं ग ॥ जल्पनं
 उपमाख्यागं मालिकास्या ॥ यज्जल्पनागं ॥ मधुलं यादलव ॥ अस्यात्मलना नाधुलमूयं ग ॥ केवलाढाह्वेत्
 डाग्रन्त्याभाठनं गथ ॥ गद्यं चिनिगं यच्चत्थयं यस्यागुविचिगलं ॥ यिगत्रियाफं यत्सोवंगत्सुखं नु यं
 खयं ॥ मवद्यं न सुखनद गगुस्त्वं धनमूयं ग ॥ ॥ गत्वयदल ॥ यके म ॥ ॥ अथयं यव
 क्षामि चर्यापात्रं गगां ववांगम्य गयं न सिद्धा नं हवजसिद्धिहृगुना ॥ एवकनविवरुं वां कक्षुयादिवक

छुलंगानिचसिचकी विवरु व्यासुसुयात्रचकदयंराकाद्यांभास्वलंवेवयादथान्यत्रनथ॥ वाक्मूलचकय
 वंगीवायामहि मालिकायापविधानंवाद्यचमकेरुदधंदज्ञाह्यमृगं॥ दन्कयागस्यपुनाविद्वज्जयके
 वर्ह्य॥ येकेवहसमायकमकवर्ह्यगुकस्थिरं॥ अनेकनेकवर्ह्यनयसमारुधानलक्षणे॥ एकवर्ह्यमभानक
 गावनाकथगङ्गा॥ मारुगृहगथवागोअर्ह्यवागोविशगधचमूवाविजनेपानात्र॥ किंचिदधनुसंयाफच
 र्याकमुंयदधनगसिद्धिं गनुंयदिच्छानिचययाधनयाचन॥ जान्वकाविज्ञलादिनूपयोवनमधुना

72

गतीलायजाह्यमांगस्वारिधिक्काकयावगीवजकनामिमागृह्यचर्याकमुंयदिष्यगगावजकलारावागुस्व
 हदवगायांकुलनकियगमअथवाचान्यकुलाहवां॥ वाधिवीजंतीक्ष्णंनमस्तुतांगृह्ययदिगीतंगीयगवा
 आनन्दानुहिक्कान्विगस्यत्रायथानिन्दासमूह्यन्ननृयगमाक्षदुना॥ तद्विवजपदेनाद्यकनूगयागीसहि
 गममन्दायश्चकीनूपधमिगारंकुलामत्मक॥ त्रगशकलमालायांसुस्वेवाचनस्मृता॥ मन्वलायां
 स्मृताहमाद्यह्यहावद्वाहनयिही॥ अमन्कायाययागीह्यविजुद्धिगमनुविजुद्धिस्मृतागीनानरुनारावः

नास्मृतागमस्मागमीयो के कुत्र गयीगी सदा सदा ॥ एदिगवानु रे वर्यं यागुवं वाजिनित्यगं ॥ जनामृत्यन्त्रवा
 धनं नकारगसदो रवेग ॥ योय के नकतामूकुठी रगुहं एवयाजयग गय के वृद्ध कपालानि वरुयं यागज
 योया गये के गुलकपाल जवर्ण क सामूक्याधियगे सदा सकवजो वीदिवठो वयुङ्गापाय सखावत ॥ एरुमके मः
 पविगं वया गीविरा रु वर्यया ॥ जायं उमनका हर्दयुङ्गा जवद्धा नरावना ॥ जायं रायं रवेद गद्वज कपाल चय
 याला रं माहं रं रेखा धं की ज कार्यं वविवर्जयग ॥ निदा मात्मानं मृष्टे र्ज वया क्रियं गनं मं मय ॥ मी वं दानं वत्वाप

१३

अत्र यो समाचर वग ॥ राग राग विवाय नगमा हनं न दीय ग ॥ एरुं रं रं ग थपानं य थपायं गुर दाय गय
 गदमनुनक ॥ एरुं रं रं निरुविकल्पग ॥ एरुं रं रं विवाय नु य याय य गथे व वग म्यागम्य नाथ
 नी विकल्पने व का व यत् ॥ सिद्धिल द्वा पिय ॥ शिष्य सम्य म्भूना व रासक ॥ शिष्य व दय गिगुं सिद्धि ॥ शिष्याः
 एरुं रं गुना ॥ शिष्यादि का विनिमूकाल ज कार्यं गथे व व ॥ सच राव सखा वन विव र थ गिम द्वा कय ॥ शिष्य
 याग पाति गाम नु धन विवर्जि ग ॥ समय सम्व व विनिमूक च यो कृत्र गस यागवान् ॥ मक गुरु प्रिया देय

३५५ गारवगिनिस्थितं गारयं वगन कृषीतसिंदुय चपय्यगट् ॥ कनभापीयनं निखं सुर्वस लार्थं हनुता ॥ थ
 गकननमाया गीतान्यपाननमर्जुनं ॥ ॥ वर्यायट ल ४ व ४ ॥ ॥ अथ क्रीमायट लं वा व्याख्या ॥
 मशायनविज्ञाय गं शातारगिनीवापिनसंभय ॥ ५ काकुलिंद संययमुज्जगमिर्युकां रवति ॥ दायांस १४
 स्वागमारवगु ॥ द्दममर्दाविगानीयानुवामाकुळ निधीउताग ॥ अनामिकाकुयादयादयागुस्यकनिष्ठिकांम
 च्छमाद संययमुदयागुस्ययुदंशिकां ॥ अनामिकांद संययमुजीवांगस्ययुदशयग ॥ पदी संद संययमुगि ॥

लंतस्या ३५५ द संययगु ॥ सुनंद संययगु ॥ सुमा नांतस्या ३५५ द संययगु ॥ मदिनीद संययमुवदं रस्ययुद संययगु ॥ र
 कूटीद संययगु ॥ यमुज्जिस्वामी क्षीरिधीयगु ॥ ललाटं द संययमुपुळं रस्ययुद संययगु ॥ पादगनंद संययगु ॥ य
 मुकीउ गनद केनगु ॥ मर्दायगिमर्दे क्कारदयगु समनगु ॥ वदीनगु यगिनी अक्षयगु साधुमहाकय ॥ यदि
 मालाद संद संययनि ॥ गगीमिलिग वमिगिकथयनि ॥ मालारि ३५५ विगांकुलासुवगा ॥ वाक्कगिगगमलाया
 दिव्यता ॥ वजमाहिगाया ॥ रऊरुग मालायुयददनि यागिन्यसु लसर्वकरुयं ॥ वऊगारु उवाच ॥ हगगवन्

कर्मभलायकस्त्वना ४॥ गुरुगवानाद ॥ ॥ योऽक्षयपीऽक्षयकुल्यंभवव ॥

न्यादं वा यथा यच्छब्दादंगमलापकोपकंगथापीलयापीलावंधेव गच्छन्नापश्चिन्नमववराचनानाद्यादम

रुमेय ४॥ दक्षरुमी ४॥ ज्ञानाथगिरिवनेन कथ्यमाना वज्रगर्भ उवाच ॥ हं रागवनकमपीभय ४॥ ॥

रुगवा नाद गायी ॐ जाल श्रवा स्वा गं मा ड्रियानंत तथे वच न्यो ॐ यो हू गि चि त्स्व काम न्यं ग थ व चो ड प यी

ॐ मा ल वं यो कं सिन्धु न ग र भ व च ॥ द्वा रं मू न्ति म्वा न्द रं वा नू पा ट कं ॥ द वी का टं ग थ द्वा रं क र्मा ल पा ट कं ॥ ३

पद्मगुणं कलगायाकोर्ज्वदं च गये वच ॥ जमदावबोहिमादि स्थे उय के गुं हि सन्निध्य गगनं चन्द्रोददवि
कलकेलव दसागचमध्वजं ॥ लम्पाकांकाचि के येव सो नाळ के गये वच गकलि नृमप के चोदं दीपवा
मिकनाम्विगं गकाक हां चोय चन्द्रोदं सुमासना तलिधीय ग रापीच वं चामानं छुपीच वं नग वस्य च वाचिगं
काहालं येव विना कोमाव यो चिका भउयपीच वं गत्सनि वं चं वरुग रं मदा कृपा क्षमज्ञान पग संसातं क्षम
ज्ञानं चादम ध्वरुठं भउ यानं वापिका ति वृमप क्षम नं निगद्य ग रादिव सं वेवप वक्षामि यागिनी नासू म ल

कं राह वजं यागिनी गनु सर्वसत्त्वाथ देगु नो ॥ वजं गरुड वाच ॥ ह र गवान के गं दिव सा ॥ १ ॥ रा ग वा
नाह ॥ मथ गय द्वा वगु द क्षम मध म्या के ग थे व च ॥ वजं ग मं ह सु के व सु फा व रु के र क्षय ग रा क
पामू त्या य य न न मा व हं क्रिय ग वि गु शा क या ही ना न सि द्धि नि तु त्मा क न क क्ष म मू त्या द य ग ॥ २ ॥ द क्ष व ग वा व
त्त सि द्धि वि धि मू व्या न य सि द्धि गि रा न ग न वं म न वं दि न मु र ग वा न व जी न कं य ज्ञा च रे क्ष ग ॥ ना क
र्य वि य ग कि कि न रा ह दं वि य ग स दा रा ना चि त्य वि य ग द्य गं ना चान्यं य च्छु रा मुरं ॥ य थ अ त्म नि ग थ स त्वं

नथलनिर्गुहं पञ्चगुहं निरुचिमया गमत्मान्वा नया नादिमात्रेण वायावत्ता १ गविष्णु पाशवसस्य सत्रा
नियगा गावन्ता मनुमृदा ४ स्य ४ सी हव कपदस्ति ग १ सी कावमदयं हानेन ह काव निहत्वादि हून्य गावान्क
वाप गं वाहं क काव निन क विगस्ति गं वाय वाय वा ये ऊ नृ तां सि सि ग न ग तीय ग व त्वे ४ वा म ग स त्वा व क्षया नि
गाव ऊ क पा ल या ग न ४ ॥ अमा पठ लक्ष ॥ १ स फ म ४ ॥ १ अथ या गिनी व क वा र वा स्या म ४ ॥ व ध
मो र ग वं ध्वा त्वा म ध्वा क्वा वी रा ता व नां वा व कं यूर्ध्व यथा न्यायं देव गानां यथा दयं वा व कं क्षाणी जलं पृथ्वी यथा

न्यायं ज्ञानासनं ॥ देवगानां मदावायु र्गोचक ज्ञयथादयं ॥ धर्मादया ह्वं चकं चिप्टं मृद्व निनामयं ॥ किं
 जस्तनरुध द कंशिको लनापयं शु र्ग वाग सध्विन्न यमृगकं प के द ज्ञासनात्मकं ॥ नोपविश वचन
 वद ल्याप विवीजकं ॥ य च्छा नार्क ह्युमाकानंद यार्म लामद सूरवं ॥ स्थितालि च्छव्युपे च काचिन्नय च
 लाम्बव ॥ वद सूर्यद यार्म लाम्बो ज्ञाप निपुको र्ग ना ॥ ज्ञा दर्श ज्ञान वांश्च नु ॥ सम गात्रा स फ स फि
 क र्ग वीजं चि द्ज्ञे ॥ स्व देव स्य पय व द्ध म्वा ग ॥ स च्छे च कम न स्थानं विम्व निष्ठा लि वि शुद्धि धर्म ना ॥

११

आकाशावयव्य चे विधाने ॥ कठिगे वृद्ध ॥ ज्ञालिका लि समाया तावे ज स त्व स वि द्ध व ॥ तज्ज्वा ज्ञा वयि
 हु ल्प हूं रु ट्का वा न च्छे ग ॥ स त्व विम्व समू र्ग मं म ह्यु ल हं विरा वय ग्ग पृष्ठ व च्छे वि ज्ञा यी ग्वद्व काना
 मलिपु रं ग ॥ व स च्छे निष्ठा ना ॥ य ज्ञा पाय स र्वा वत ॥ य ज्ञालिका न्य पाय नि य द्वा र्का स्य प र द ना ग ॥ लो
 र्था द्या र वं य स्या र्वा द ह्वा र दं प व कं पृथ क् ज्ञा स पृठ गा व र स्थि ता वे य के या गि नी ॥ य के स्त न्ध स र्वा
 व न रा व यं या गा वि स दा ॥ १॥ देव जा य मं लो गी वा न् ध्यां वा नि या गि नी ॥ को व वी व जे ज की व म धा ने वा ल या ॥

गिनीगवाक्यूटपू॥ तमेवोवीवीवलालीचस्मरीपूकसीगथागववीचधुनिनीवेवत्रूमीअमिनीमगासअथ
 वरयइवगीवेवववीचुववीसदा॥ एवनिर्वाहस्वरावनस्तितावेगोद्विदवगीसर्वादिवरयइकइवइ
 मदागोदायकेमूडाविरागिगाथाचकवकाइवकीकाशाकइकपालानावगीकथोवावकीकूधुलकधीव
 हसुत्रकमवलेगायकेमूडाविशुद्धावयकेगेशुद्धमूडकाथासर्वाचगाठशास्त्रागायथानेवास्मयागि
 नी॥ कपोलेककचयगादक्षिणकलिअत्रिकाइवडांगवेववाभनव्याचचर्मावगाकदिशाज्ञवान्छाकलदी

७८

कादिशुजायिकलामर्द्धजोगागथमानादिषठदावाभंकरिगुंकरुकास्तिगा॥ लावालावविकल्पस्यहि
 नसायअराजनंगावगुमावाभंपीयगसिद्धिदगयगावडांऊन्यागाकोलेयासर्वायायनकल्पिगंगाचगेन
 लावयचकंलक्षसिद्धिमकायूयागसायथमरावयकूका॥ दिगीयचकविरावयत॥ एगीयरावयसी
 गंगाचतुर्थद्विगतकेगागथयेचेमनीलवर्षवृषभशुक्रददिकंरावउङ्गावययोगिविचमार्कयून
 गथमकुमउत्यरिकंवेव॥ उत्यनकमभवव॥ कर्मदयसमाक्षिपुवजिघमधमिदज्ञानाउत्यरिरागंका

थिरं डत्यनकथयाम्यहं रात्रिधामा विविधशेषं ह्यन एवमिति स्मृतं गारावगतिरसमापदिह सखं च कमपु
 गारायथ न्यायं स्वसंवेद्यं वाधिविरक्तुं दवता गायथ दयं एव च कुं देवि ध्वंसं रुजं गरायथ धिगाव ह्वय ह्य
 उपायः यन्त्र ४ स्मृ गराय द्वादशया देवि ध्वंसं विगि संवृति रदग ४॥ यं सिगावा देवि ध्वंसं कुं गस्य सूखं वैवा ॥ १७
 यज्ञाया मपियथ पुंसि ह्युक्तं गस्य सूखं वैवा राज ॥ व द्वा नन्दानां च गम ध्वंसं यद नं ॥ सदृजं च गुविधं यस्माद्
 त्यनकमप्यक गरायानन्द पथमवीर्यं यन्मानन्दं कुयागिनी ॥ सूत्रगा नन्द समस्तं वै गत्सखाया य सर्वत्रिगु

१७

गजानन्दन सूखं किंचित्पुत्रमानन्दं गगाधिकं ॥ विजमानन्दे विजागारास्या गसु रुजानन्द गुह्यतशा
 यथमत्यर्था नृदिगीयं सूखं वा कुशया ॥ रगीयं वा गना सत्वा गच गुर्थं गनरा वा गवाय नमानन्दं रवं
 याकं निर्वीधं च विजाग ग ४॥ मध्वमानन्द माग नुस रुज मरि विवर्जितं ॥ विजा तान विजागस्य मध्वमा
 नाय लय ग ॥ न गुह्य ह्यन वा पाय ४ सम्यक् गत्वा न वा वग ४॥ ना न्यन कथ्य सदृजं न कसिल र ग ॥ आत्मना ह्यय
 मप्यष्टगुण्यद साप सवया ॥ दीनम ॥ क्त्वा न्य न्यानि यानि गानि च ॥ सर्वं गानि समावीति दृष्टं गत्वा

वने गदीनसुद्धयदार्थगुजुलु गंरावमूयने ॥ मध्वनवर्जिन ल्यांम न्यानीगि पठुं दियं ॥ स्त्रिचत्रलयानिगी
 नीगिसर्वेगानिनेचादं ॥ समानिगुल्यध्वनिमनमेकलरावने ॥ समगुल्यमित्यकंगस्य चकावस ॥ ४४
 ग ॥ समवसुत्तकलावत्तननाथनरन्यने ॥ मरुवादिजगत्सर्वमरुवंतुवनगयं ॥ मयाव्यापिगमिदंसर्वनाः
 न्यमयंदेष्ट्यनेजगन्वाचवंसुत्तागुवेयागीयाग ॥ त्यासासमादिग ॥ सीसिध्वनिनसंदहामन्यपूष्पापिमानव
 ॥ ४५ ॥ गानेनयानेगथास्त्रानेजागुग ॥ ४६ ॥ फापिचिन्मयग ॥ सातलंगुगतायाकिमुहाम्हाहिकोंदकशासावग ॥

२०

हिजगत्सर्वमनसायस्मान्नरावग ॥ सर्वधर्मपत्रिज्ञनंरावतानेवरावना ॥ स्त्रिचत्रलाच्ययरावारुहागु
 ल्मलगादय ॥ ४७ ॥ रावत्यवेयवंगत्तमत्तलावस्वव्यकं ॥ गोषांमकंपचंतास्त्रिस्वसंवयंमरुत्सुखं ॥ स्वसंवय
 द्रुवस्त्रिदि ॥ ४८ ॥ स्वसंवयदिरावना ॥ स्वसंवयमयंकर्मवाधवाकर्मजायग ॥ स्वयंदरुस्वयंकर्कस्वयंवाजास्व
 यंयु ॥ ४९ ॥ वागद्वपंगत्येवेष्वांभादमानंगत्येवच ॥ सर्वगतत्यदचम्यकलानाशकिधाउही ॥ धर्मादयाह
 वंज्ञनंरुवसमंसापायानिने ॥ ५० ॥ लावकसुगजागहिपुजापायस्वरावरा ॥ शुकाकावाएवहगवान्गत्सुखं

कामिनीस्मरं ॥ ५ कामकाविद्यालासोषां दक्षदकायनावगिष्वास्वसंवेद्यमिदं हानंवाक्यथगीगतमत्रं ॥
 अचिच्छानं कमाच्छप ४ सर्वं हाननकलयं ॥ पृथिवी आयच्छवायुश्चरज्ज्वाकासमवच ॥ दक्षभागसर्वतवा
 धनिस्रपवंचिलिवदनं रास्वर्गमये च पागालेयकवर्लैरवक्ष ॥ ६ ॥ स्वपचलागति कल्पेन वाचिचिलं न वच ॥ २१
 नमसमस्त वेदसिद्धान्तैः कर्मयसवयसवादिस्सुथ ॥ सिद्धिर्न स्याद्देवैश्च द्वायूनज्जन्मरवान्मत्र ॥ नवगतवि
 नासिद्धिर्विदलाकेयवगुचरान् हानंयनद्वजं वृक्षगस्यपरिभ्रमशानदी ॥ ७ ॥ गुणवद्वनदीययोगियवद्वगु

गसगनक्तलयातानुस्मरवामदावागुग ४ ॥ ८ ॥ गियागिनीचक्रानाममदायागिनीतां मलायका ॥
 पठला ३ ॥ ९ ॥ म ४ ॥ १० ॥ यचंविशुद्धियटलवास्यास्याम ४ ॥ सर्वेषां स्वत्वमुनां विशुद्धिरुथगा
 स्मृता ४ ॥ ११ ॥ पश्चादकोकददनवगानां गुकथगवाचगुदियं पये ३ ॥ १२ ॥ चैषायननं पये ३ ॥ मदातं स्तरावेन
 विशुद्धं ॥ १३ ॥ हाननकुलोवावर्गं विष्म ॥ १४ ॥ गवास्वसंवेद्यात्मिकाश्चिन्तायश्चाविमृशगवाविमयानाश्च ३
 लावत्वान्स्वसंवेद्यपनस्वंगान्पविमयादियव ॥ १५ ॥ रासकदियागिना ४ ॥ सर्वं शुद्धरावाहियस्माद्धय ॥

[illegible][illegible]

वीविशुद्धि तशासुखामक्षधनगुणुद्धि मित्रजि हां गार्थि वीयर्क सीख्या गा ॥ अन्धगु ११ वरी स्मृ गा ॥
 नऊन्य गुणालिनी रुया वायुं वीयुकीरि ता ॥ देसाद्या गापि नावडी नागमचवा विथा गिनी ॥ उण्याव
 जजाकिनी वुपे शुन्या गुफले वीका ॥ मादवजा गथाख्या गा रुपा दी नानु ॥ अधन ॥ १२ ग नर ॥ अक्ष गे स्क न्ध
 मयलिका मयक्ष ग १॥ यन गुयन गुवक्षानि लाक सून गुगे नन वन्धन मूत्के लाका मूद गिव गिन नग लं
 तल विवक्ति त सिद्धि नल प ॥ त स्माग्ग न्धन सधन नूयं ने व व स न व विरु विशुद्धि १॥ स्य र्जन धर्म न स

२३

वीविशुद्धा शुद्ध स्वला वज्र ताम्र गमन ॥ विशुद्धि यठ लन वम १॥ ॥ अथ ग १ मयु वक्षामि म ह्यु ल स्य य
 थर्क ॥ सिधम रि विरु गे यनी विधि र्के पिय वक्ष ग वा व सू र्वा ॥ अथ य आगी यथ मं दे व गा त्म र्क १॥ १॥
 वीज कृ य यत्ने नूय १॥ अत्म शुल मा लिख ग रा उ या नी विज न द क्ष वा धि स त्वा गृ द ष च ॥ म ह्यु ल ग म च म अः
 वगु य न्म ह्यु लं य नं ॥ दिव्य न व जा ल ख ना थ वा म न गु यून ग य र्के व त्त म र्थे च्छु र्के व थ वा ग ह्यु ला दि रि १॥ रि
 ह स म ह्यु लं का र्थ ग या नु क्ता धि क र्के ग ग ॥ वि आ स्य य व र्ख वा दि वा १॥ य र्के क ला रु वा १॥ अथ वा या नां य

आलक्षी श्री उक्तं गेव वरागाव न सवरा मूडा याव रुक्मवगीर वगू ॥ मूडा याव मूव वव्या उ पाय स्या
 मूव मूथा मव याग यय दू गं निष्य वकु निया गय ग ॥ का विग वं व ग गे व स म व स गिष्य त्म व वं ॥ स व सं व द्या दू
 व द्धानं स्व पत्र मी व लि व र्जि गं ॥ व स म वि ने जं न्नां ता वा रा वा त्म कां प वं रा य द्वा या या व गि मि भुं ना ग म ग वि मि
 छि गं रा स व पा हि ना या छि ४ स व व पत्र मा द्वा ४ ॥ स व व्या पि स न वा सो स व द द वा व स्ति न ४ ॥ स न वा सो ज ग
 ल यं रा वा रा वो ग दू दू गो रा म न्या नि या नि गा व स त्व वि द्धान नृ पं व य व धं पू वा न मी श्व रं ॥ आ त्मा जी वं स

२४

ल के का ल प द्वा व म व रा स च रा व सा रा वा सो म या न् पी व स स्ति न ४ ॥ य थ मा न न्द मा तु तु य व मा न न्द तु
 द्वि सं त्वा ग ४ ॥ नी यं वि त मा र्वा के व तु र्थ स द्वा जं मृ ने ॥ ५ वं स ता तु वे स च व द्वा ग द्वा वि या व्वा था प च म
 वि स य मा प त्ना मूर्च्छि ता ४ ॥ य गि गा म्वा गो ॥ य थ मा न न्दं ज ग द्वा पं य व मा न न्द ज ग र्थ मा वि व मा न न्दं ज ग चै व
 न वि या न स द्वा जं गि म् ४ ॥ ॥ ४ ॥ गि र ग वा ना द ॥ ॥ ४ ॥ द व ज स्य र्वा व द्वा वि ग द्वा मं स या प न
 यं दि वा व ज ग द्वा स्य वा ध य ॥ न वा त्म न वि वा ग द्वा म द्वा मा ना य ल य ग म ग या द्वा व ज ना द व स द्वा ४ सं वा

४ कलशार्थेयं गंगयत्नं वागुसूत्रं मुद्रादिगणकं च ४४ पंचतलपत्रिकादयामविजयके पूर्व ४
 द्विचूयं गंगयत्नं वागुसूत्रं मुद्रादिगणकं च ४४ पंचतलपत्रिकादयामविजयके पूर्व ४
 यथमंभयवक्रागिसिद्धौ लमायावद्वेगं ॥ सदसास्त्रयिजागदलविवरुगं एदलक्षसिद्धौ मृदाया
 गीगुसिद्धागि ॥ ४८ ॥ दमधुलं क्षमा वगुस्कोक्षं समूर्जलं ॥ चगुक्षोक्षं मदादीर्घं दानोर्ध्वं दानवर्धनं ॥ ४९ ॥
 वामं वैर्यं कंजं वक्रं कंजं यत्नं गंगं ॥ वज्रसूत्रं समायुक्तं नानाया यत्नं गंगं ॥ ५० ॥ दीपं गंधं अग्नौ मूर्तं ४॥ नवनम
 नियुक्तं नमः प्रसादनं वागुसूत्रं ॥ सूत्रं नमः प्रसादनं ४॥ स्वदेवगन्धर्वगण ४॥ वक्रं क्षमायुक्तं लयस्य गंधं

२५

गुं गंगार्थं कने वसन्तं दत्तं वधो वध ४॥ वलि के दाययं नमः प्रसादनं ४॥ वक्रं क्षमायुक्तं लयस्य गंधं
 यत्नं गंगार्थं कने वसन्तं दत्तं वधो वध ४॥ वलि के दाययं नमः प्रसादनं ४॥ वक्रं क्षमायुक्तं लयस्य गंधं
 यत्नं गंगार्थं कने वसन्तं दत्तं वधो वध ४॥ वलि के दाययं नमः प्रसादनं ४॥ वक्रं क्षमायुक्तं लयस्य गंधं
 यत्नं गंगार्थं कने वसन्तं दत्तं वधो वध ४॥ वलि के दाययं नमः प्रसादनं ४॥ वक्रं क्षमायुक्तं लयस्य गंधं
 यत्नं गंगार्थं कने वसन्तं दत्तं वधो वध ४॥ वलि के दाययं नमः प्रसादनं ४॥ वक्रं क्षमायुक्तं लयस्य गंधं

त्रिविधिगणनं च सविगणनं चैवं कावकनाठोपाही हीकावरुयानकभायश्चरुत्वं समाख्यानीविशुद्धं
 हानवृषिर्घासंसाववावदानननुतास्तेरेदामनागपिवायनसवगोनचराखनरावकनचविगहनचग
 क्रनगुहकामांस्तस्मिन्निगविहृतमूर्गुनचवृक्षमाहनलोचयविगं ॥ नागध्वयनमाहनङ्गी ल्यानचयेष्टु
 नानचमाननदृष्टं ॥ रावनरावकमिगुनक्षरुं निसुनक्षरुजाख्यविविगं ॥ ॐ ह्यादवजगह्रिष्य ॥ हर
 गवनकस्मान् रागात्मकं रावन् ॥ दहंस्वरावगहृष्टमादावनालरावकं ॥ गणादागवान् वजीगकिनीनां

२७

रत्नदंष्ट्रानिस्तुत्रकस्वन्पात्मासुर्वदह्यवस्तिगणादृगवनकस्मान्महालौकिकहस्तश्रवा ॥ राग
 वानादृग ॥ वावालककलशागानस्यर्जनकाठिन्यधर्मैद्यधित्रीगणजायग ॥ कावित्रिगदवाकाज
 दृष्टानास्त्वसम्भवशागजाजायगद्यर्षधाम्नसनादायुष्यकीर्तिगशोभयमाकाशधामुच्ययवेरिहय
 विवस्तिगणागस्माशोभ्यंनगत्वाख्यंमहालगंयगंसर्वं ॥ ससुजाख्यायइत्यनंसहजंगयुष्यकीर्तिगं ॥ स्वरा
 वंसहजमिष्टकं सुर्वाकात्रेकसम्भववाद्यथायाथारव आगीमूडाहविशोगगणाङ्गुन्यगाकनूधमिहिनवा

धिचिह्नमिगिस्त्रं गं न सक्तु जायान ह ॥ मानमाधुलं यं न च स धुलं च ॥ स सक्तु जाय प ॥ स दाम सक्तु जाय यं ग ॥
 लधुलं च ॥ स मा स गि चि स मा ऊ नू पी ॥ ॥ अलिष क पट ला द क्ष म ॥ ॥ समा क् बाल ला दी च ॥
 या ग ना क थि गा स दा ॥ व क्ष वा मा जि गा द धि ॥ य र् ली क्षो च या म ग ॥ ॥ कृ षि र् द क्षि हा ला ग प र् ली क्षो च नि ॥ २१
 या ऊ य ग ग म क्ष मा सक्तु या द धि क्षो च ना मा ऊ जा क ॥ पा ग ना च क च के नै व क सक्तु के न गु व क्षी क च ग ॥
 पू न के स्वा कृ षि स्त्र मा ना य क्ष न के न गु पा पा ग ना सि य व क्ष व क्ष य क्ष य की रि गा ॥ अ कृ षि व जे

व क्ष व क्ष मा ना स च व र् ल हा व प्र मा स या ता न सि क्ष ग ना ग सं क्ष या रि व ग न क र् ल वा य चि न्द्रा व द्ध
 प द्ध य क्ष मा ध यि स्वा च गु द धि स त्व नि व गा च य व द्ध क्ष मा च हो न रि कार् यि स्था न स म य र् द ॥ य व र् ल व ग ना स
 र् वा कार् यि नु क र् ल वं दि त्वा स त्व य वं व नां ग स त्व य का च मा गं ह म् द क्षि सि द्धि न व र् ल ग ॥ स म के र् ल क्ष य ग र्
 ह व क्ष सि द्धि र् द गु ना मा दं ग दि ग था दा दि ञ् क च दि व वा ग प क्ष मृ गं ग थ र् द क्ष व क्ष सि द्धि र् द गु ना ग स
 का व र् ल न गा स क्ष य ग र् द व क्षा के मु ल क्ष हो क्षा स का व र् ल र् व सि द्धि वि व मा न द्ध व क्षी ॥ स म्ब वं क्ष मा धं ग च

[illegible][illegible]

यागयुक्तात्माश्च यवाहीदन्कयागवशात्क्षमयन्मविंशुशासनगिष्ठतुसिद्धिं कांक्षकक्षायथमया
 सकालस्य स्वानं वैकली गंशुरं वायगृह्ण ४ सिद्धिं गमन्ती मानकयिरुहसमोदितशगस्रगृह्णति ह्मका
 लसिद्धादुसिद्धिचगला ॥ रावय यागिनीया इत्यवाहीदन्काकृतिगर्जं विंशुयदा लयगवागुज्जना
 वमनपूगंरुक्षयगवावन्दनेहसंसदयगकोपिनेह्मदयकडिमनिहसंरावयन ॥ राषां गच्छतु गिष्ठतु जूष
 नृसन्गारगवनीं सवयनया इत्ययागिनी रावयद्युगीक्ष क्षमयन्मन्युपक्षज्जविद्यादूखवेगसा ॥ नस्कागय

३०

वद्धयत्नासिद्धयर्थसिद्धिं कांक्षि गिष्ठावजगर्हमयाव्यागं क्षान्तिं किञ्चित्पनामनं रासिद्धयर्थं कोगुकेनापियुक्षम
 कंयवीक्ष्ययासर्वविनांपदिय अंदवगामर्हिवगसादिनमकमविच्छिन्ना रावयि रायविक्षथ ॥ नायाया
 याम्नि संसावस्वयवार्थसिद्धयससृष्टदयसि नाविद्यासदाथायययकाविधी गारयान्मादेस ॥ अदू ४ खेत्तकपी
 जयपदवेसा नागंदवमहासादेहमाचकानेयैकैश्चगु ॥ वंविमृष्यमात्तवेदिगादिगदुत्मादयं ॥ कथं नक्ष क्षम
 कं यागिनहसन्निरोधवगायकं नगर्यकावीचुपाक्षेवक्षं वताश्चय ॥ अयिगुयज्जन्महीनायमृत्वा इव कर्मि

वृकस्य मदात्रगं ४॥ दन् कयागस्य पुन ४॥ यस्तु मायायय त्रगं ४॥ मदा सिद्धि रवि यस्मा द्वा कभकस्य योगि
 न ४॥ उत्पलिय लया यो के य ४॥ पा यान वो ध र ग ४॥ पाय ४॥ सक्त वायस्मा त्त्र यं ४॥ य ४॥ र वान की ॥ ग म य लयं ना
 गस्त्या सिद्ध त्या दाने वर त्रगं ४॥ य लया नियो ग कश्चि त्त्र या रा वान वक्ष्य ४॥ ४॥ त्रिक या तान य य के रा
 वयदु गी मय य के स प्रवल्क ल्या य प के निश्य य के य न ॥ य थ माया ग थ स प्रं य थ स्या द रु र व ४॥ त्रै व म
 हुलं रा नि सा यो यो स या ग र ४॥ म दाम् दारि षे क वू य थो ड ग म द स र्वं वा ग र व र य व स्या न म हु लं ना न्य स

३२

म् वं ग म् वं क वूं म् च पी गं म् वं व कं म् वं सि गं ॥ म् वं च्छ म् म् वं नी लं म् वं क सुं व वा व वं ॥ म् वं य ४॥ स र्वा या
 य ४॥ म् वं क ल्य न जं ग थ ॥ म् वं रा व ४॥ म् वं रा वा क ज स त्र ४॥ म् वं सृ ग ४॥ ॥ व ज ग र्त्त ४॥ ॥ ४॥ त्र
 न्न क म यो त्र म यं स त्त्र वं म दाम् वं म गं ४॥ त्र न्न रा व ना ही ना ड त्र वा किं प्र या ज नं ॥ ॥ रा ग वा ना द ॥ ॥
 ४॥ त्र च्छ व लान न क्ष यं स ता वा धि स त्र ४॥ गि ॥ द दारा व क र ४॥ सो र्वां सो र्वां व कं न न क्ष ग ॥ व्या या व्या य क नू य
 ४॥ स र्वा व वा पि रं ज ग र्गा य थ पृ थ वि रं ग न्चं पू व्या रा वान ग न्य ग ॥ ग थ नू या य रा व न सो र्वां ने व प ल य ग ॥

[illegible]

ब्रह्मनरावसूयादरावन्पायिनेवसमनुजमृत्वाकावृषीवावृषीपचमसोस्वागशागस्मात्सदुजंजगत्सर्वसदुः
जंस्वन्पमृत्वागेवास्वन्पमवनिर्वाहंविह्वयाकानेचमसावादेवगायागान्पनुजागेमागव्यवस्तिनं
गानुजमृत्वंवर्धसंस्वनार्किंनुयाकृगवासनावायनेवविपस्वद्युष्टमियंगमर्चजक्तवशागेनेवविषगत्वः
इविषद्यस्तदयेगविषंवायथावागगृहीतस्यमाखरकंयदीयगवागनहन्यगवार्तंविपवीगोषधि
कल्पनागवागवहुद्वारवनेवविकल्पयनिकल्पगशाकर्तुंगायंयथाविष्टंयतिगायनकृष्यगगनथाएवा

[illegible]

यत्पादयार्द्राद्यनायकं श्वाङ्गुष्ठाश्च सिद्धिश्च सादमाद्यवायुसंहरवाम् एवं नागं रवेदकं च किं काशालकं हंभय
काशं पिष्टुनश्च जिह्वापिष्टुनं माकासं रवं गन्धकोचवमहश्चिरुपेक्षेयं च सन्निगायकं स्वकालप्रयत्नात्
यानकसहस्रं श्वाङ्गुष्ठाश्च दकस्वरावासां सहास्रं च यनमश्मच्चनश्वापेक्षेयां गिरादननागदियेक्षेयं गमा
गदश्वाङ्गुष्ठाश्च दीवाल्वायुल्याजकं कालं च तथा गगसं च्छाश्वासं च कालं च अनककालं च कालं च कालं च
श्वानि गानि च सदा कालानि महानि काटिकालानि वरुनीरावन्ति गानि काटिकालं च सदा रवन्ति गानं च कालं च सदा

कृत्वा लिख्यमानं नन्दकुलोद्भवमिह ॥ सिद्धिनिर्घ्नयानामधिनीयपटल ॥ सम्यक्वकीर्तय
नं गनिदानं नामापायं शिखीनां कथयामास ॥ सम्यक्वकीर्तय कथं सखायापंतयेव च ॥ शान्तदक्षिण
देवैरन्यैरेकैराजनादिकं ॥ गणसंभवमाह ॥ सम्यक्वकीर्तय विद्वानामवकाशं यतिविद्वानां ॥ अशिक्षाया गसं
त्वावंकावमहत्सुत्वं ॥ अथ रागवक्तव्यं सत्त्वयोगिनो वमाह ॥ ४॥ एवंकावं किमुच्यते ॥ अकिनीनाकुसम्भवं
दज्ञायतु यथा न्यायं ॥ रागवान्ज्ञात्वा जमकुं ॥ ॥ रागवक्ताह ॥ ॥ अकावकृतियदिव्यं ॥

[illegible]

वंदनं वकीषिष्यं दीक्षां पायवं सज्जं दत्तं सदा ज्ञानं सर्वदं हव्यवस्तिनं गजद्वयं च यत्र चैरावा रावात्म
 कं यत्तुं गच्छि लवलं वाष्पसगिष्ठं त्माया नृपी चरातिव वामघुल चक्रा यथायन साग स्यं यागिनिष्ठं यं गम्यथा
 शिनीनां रगिनीनां मृषित्वा वज्रग लोरग वक्तुं वमाहू गमघुल चक्रं चिम्बग सर्ववृद्धा त्वां यत्तुं वदं
 यत्तु यथा न्यायं रगवक्तुं यागिर्मिरग ॥ ॥ रगवानाह ॥ ॥ गमघुलं सावमिरकं वाधिविलं
 महत्सुखं गच्छानक कजागीतिमघुलं मीलनमगं गच्छं निवर्तं वाधत्वा यं विषयादिना विरक्तमघनं रावात्मकं

कालयातानगत्मासोदकंयकीयगं ॥ ॥ रागवानाह ॥ ॥ याज्ञिनश्च त्वयाद्यायावकावोचमुषा
वव ४ ॥ अदरुचो त्वयागमं सेवनं पत्रया विन ४ ॥ अकचिरुं पात्रिवधं प्राकं पात्रिविरुं यगामवं ॥ लाका
नूला नयिष्यामि मुषा वाद चोरादि तं ॥ यापिकु कामदरुचो यजदा वा ज्यारु सन्दवी गजथ सर्वया गिभारगव
नमवमाहुषाकं वनरुविषया ४ कानीन्द्रियानि ॥ किमायन नं कनम ४ स्तन्य ४ कं पनरु अगव ४ म ५ चां किं स्वरुवं
॥ ॥ रागवानाह ॥ ॥ वदिसया ४ न्यं हद ४ स्यरुथेवव ॥ धर्मभागुस्वरुव द्यवदगाविषया

३१

नसीकृन्ग ४ गार्थनेवान्मया विनीयम् ४ सर्वजज्जकिन् ४ पयेभ्रमंगृहीत्वासमयद्वययेह गवत्तकज
सुखपूजयनिवाकन्दूयागानानगार्थान्कपिवायनिचवजामृगवसं ॥ गग ४ पश्य ४ गवान्कुक्षसनिज्जिष्ठा
नंदर्शनवसं ॥ गग ४ पश्य ४ गवान्कुक्षसनिज्जिष्ठा नंदर्शनयनिवा ४ गग ४ जज्जकिन् ४ मया गृहिं कंगं गत्वं स
र्ववृद्धेन मस्कंगं ॥ पूजावज्जयरावनकथयामि ॥ ४ गग ४ य ४ त्सा ४ द्याफा ४ सर्वदेवस्यादक्षिष्टं जानुम
धुलंपथिवांपनिष्ठायाथनरागावांस्तनोऽलिंपद्यम्यरागावगावराधिगंष्टन्वनि ॥ ४ गगवानाह ॥

त्वानं पानय च पापं गम्या गम्यं न वरुं यगु वा स्नानं हो व न क्वी ग श म्य धर्म न वरुं यगु वा म नु ने वरुं स्य दी
 मान च्छानं ~~ने वा व ल म्भ य ग वा नि द्रो ख गं न क्वी ग न द्रि या धां नि वा न धं रा र द्धो यं व लं सर्व प चे~~
 व ह्नु स मा व रे ग वा न स ग सर्व या पि ना कु नि वि शं क न ध ग सा य मि ग स्त रं न क्वी ग द्धि ग द्ध वं त थान च वा न व न्द
 यदि मान् दे वा न को ष पा षा ध म्भ यान् वा स ग रं द व वा म्भ यान् वा य गि ना य क ४ वा श म्भ च धु ल च मा च
 उ च्छि का य न स धान रा व क्क क्वी वे स धो दा आ ना स द द मि व स्य त्ता ग वा ये के म्भ गं गु ठं म यं वि षं वि न्चं पु स

३६
 ३६

ग ग रं ग म्भ म्भ च क वा य दि क्क ल व ध क गु क स थ प रि सृ न रि ज ला स र्वा धि वि रि न र द्ध य ग वा ना र द्धं वि
 य ग किं वि ग द्ध य ज्ञान य ग सा वा स्व य म्भ क म्भ म्भ य प म्भ रा धु नि व ध य ग वा ल्हा य मि ज्ञान वा ना कु मि धी क्क
 पि व द्ध गी वा को पी नं वि ष्व व ह्नु च म्भ क्क वे र्ख धं ग थ वा प्थं य ग ल य पा य वे न्ध य स द्ध क्क व रं ग म्भ थ व र ग र
 आ र ॥ इ न द्रि या न्य वि षु द्धा नि ष ध्वा क्क गा नि वे षु दिं ४ स र्व वि य स्य र ग व गा क थि गा य वा ॥ ॥ रा ग वा
 ना र ॥ वा च ध्वा मा द व की गु ॥ ध्वा यो गो द व व की का म्भ वा हो मा स्य की र्वा गा व क्क व वा ग व की

का ॥ स्य त्वं ष्ठी व्याव जीव वाम नाने वा त्वा या गिनी वा क व व म रि म हा स त्वं द्रिया न्नां वि शु द्ध य ४५

वा क ऊ ग र्ग उ वा व ॥ वा सं ध्या रा यं कि म् य रा ग व न रा क थ नि च्छि य रां वा या गिनी ना गु म हा स म यं
जा व का ये न च्छि दि रां वा द सि रां ये द क्ष रा या ना गु आ लि रां यं द द के स थ ॥ ग लु धा पि व गु क्त व स न्धा रा व
न हा दि रां ॥ ॥ रा रा वा ना द वा व न्धा दं व रु ग र्ग शृ द्ध त्वा मे क थ ग सा वा स न्धा रा त्वं म हा रा वं
स म य सं का ग वि रु वं वा म द नं म यं व लं मां सं म ल य जं मी ल नं म रां ॥ रा ति ४५ व ट ४ हा व ४ धा वा ज्जु स्क् रा व

३८

हं ति वं स कं वा ज्ज रा ति ४५ प व्वा धं या कं कृ पी टं उ म नं म रां वा म् रा वं द द वं वा रां रा वं का लि जं म ज्ज स्य धं
दि धि मं या कं वा क पा लं प म रा ज नं वा रा कं रु फि क वं ड यं व ज्ज नं मा ली नी न्व नं वा गु थं व गु स म या कं म्
गं क म् वि कां सु ना स्व य म् सु सि रु कं ड यं कृ कं क र्प व कं म रां वा म हा मा नं सा लि जं या कं या कं दी य या रां कृ
द नं व जं वा ल क र्वा रा प म् क कं लि कं म रां वा क लं प व वि ध्या र्वा रां व धु रा द न रा दि रां वा स न्धा रा व रा व
वं स ४५ व ४५ व ४५ को लि का वा जं वी व ज्ज व ली र्वा रा रा न दी य म् व ली रा थ ॥ च धु ली व ल व ली व व वि ज्ज

अगनीमगावजकीकर्मकलीवेवगेनगामेदास्वसिद्धिदाशासांसंकेतवद्वजंपूजयित्वापिबद्धगीवा
 वजगारसहासत्ययनयाकथिगंतयिगासर्वसादनंगंअंसन्धाराखमदहंगं॥यारिषिकाशुदेवजं
 नवदगसन्धाराखयावासमयविदाहनंगत्यजायगेनागसंसय४४०॥एवदववोवेधराहकालविषादि
 रि४सियेनसोयदिवक्षापिसन्धाराखनराखयगास्वसमयविकंयाप्ययदिनराषादिदंवव४४१गदाः
 अरंयकूर्चनियगित्यचगु४पी४जागदंवजसर्वगनोनिदानसन्धाराखानामहगीय४पटल४४॥

४०

अथवजगारयमूखाशासर्वजकिन्व४संज्ञययाकादोमानस्ययावारगवतांवजसूचमवमाद्गारागवानसं
 यमयनयगुचयापटलायदाख्यागंगीगंतायंविमिद्धिदंगगगुसदहामवरुगकिं॥देवगारिषकगायचक
 थिगंधवादिमूदसंगगगसदहामवरुगकिंसंयंकस्यमूदहंसुनपटलयन्याकंनेवात्मादवीच्यवीजकंगाय
 भगानि४संज्ञागा४४किंवीजंकस्यपीजकंगकूलपटलयाख्यानाताद्यादिषाउत्तमिकावाविहृदिगामांक
 थयनुरगवभाशानिमगरगुवा

गारागवानाह॥

गकालयिबहियवाला मूमिधिवेक

कला वाद्यहाकिविउदा वाऊं कनू हाकिअनला ला वागदिरवृवाऊं गदमअनापिऊं ॥ दलकाह
 लिऊं वयदिअऊं दून्वृगादिवजिऊं ॥ चउसमकरु बिमिहासक यवलाऊं अऊं गमालह वनसा
 लिऊं गदिरवृवाऊं अऊं वायव हायवृकन ना गुदाशुद्ध नमृदिअऊं ॥ निबंसज अऊं वजावीअऊं ग
 दिऊं सवावयदिअऊं ॥ मलयज कून्वृवाऊं जिउमराहिं हावजिअऊं ॥ ॥ नायं श्री हनू कनू यं हा
 क्षमसुविगस्यु नियागग ॥ राव नावका चिके नाविना त्यासवगसा ॥ वज्रधर्म साथवृद्ध ॥ यागिनी लिख्य मा

५७

रुशिहामायां गीत नायायां गीय गनूय गपनं वागदव द्वालननेवात्मव द्वा सुथे वचवाअननेव वहां लाक
 सन्तजायं त्वनननु ॥ सादवं गीय गयग सादवं यग नूय ग वागदाध्वं यत्र सुखं गयद्या दनु लक्षय ग वा लक्ष
 नं यथमंगलं गृधगलं गग ॥ यत्र शक्य वसलयजं गद नूगी गाधिष्ठानं लक्षय ग वा नूजं हंसस्य रुद्रस्य ह्यय ग
 गीगल्लय ग ॥ गगमायावपि हाद ह्यवा क्षानतु लक्षय ग वा मूद हं लिहं नाकवे अर्धेन वक्ष गे कलं वायक कलं
 रावाना यागान् सिद्धि नापि समधक ॥ नेवात्मा दय मूद हाव ज ये माह मूद या वा लो नीयि नु न मूद हा

वाजीरागमदयगसञ्ज्यामदयोजकिनीकेरायर्कसीद्वयमदिग४। भवजीमादमदयचक्षुवी
 पिभुनवमदयासञ्ज्यामीरागमदयपूनलोवीकेद्वयग४। वाजीमादमदयचक्षुवीपिभुनमदया४। अद्यस
 जीरागमदयचक्षुवीमादमदिग४। अद्यचक्षुवीरागमदयचक्षुवीमादमदिग४। अद्यचक्षुवी
 यकंराजालसुगीयकंलोवीचक्षुवीचक्षुवीचक्षुवीचक्षुवीचक्षुवीचक्षुवीचक्षुवीचक्षुवीचक्षुवीचक्षुवी
 मूकेवचक्षुवीचक्षुवीचक्षुवीचक्षुवीचक्षुवीचक्षुवीचक्षुवीचक्षुवीचक्षुवीचक्षुवीचक्षुवीचक्षुवीचक्षुवी

४१

मगंराद्यसमीरागयादक्षकंचगुदक्षकंचक्षुवीरायर्कसीद्वयमदिग४। भवजीमादमदयचक्षुवी
 ४कथिगदिधौउहासिकागानोडीद्वयद्वयकेकायागिन्य४कमल्लानरा४ललनोत्रसनाश्ववृगीनेवात्माया
 गिनीमगा४। सर्वल्लामाखञ्जनाग४। अद्यचक्षुवीचक्षुवीचक्षुवीचक्षुवीचक्षुवीचक्षुवीचक्षुवीचक्षुवीचक्षुवीचक्षुवी
 धिचिरुंरवचक्षुवीचक्षुवीचक्षुवीचक्षुवीचक्षुवीचक्षुवीचक्षुवीचक्षुवीचक्षुवीचक्षुवीचक्षुवीचक्षुवीचक्षुवी
 कथ्यनंकिंनवेखाकंसर्वयागिनीसम्वंरासहजानन्दस्वरावकेययंपीवनस्वराग४। रागवानाद

गनुवममययवदसिगवजगद्गुहादवाकनापायनात्वादनीयं वाधिविरुं रां रगवानाद्वामधुल
 यकाप्रपायनस्याधिविखानकमधववाधिविरुं मूत्यादयदेवलिस्वरुनूपकं वासं वं कन्दका
 चाविवरं मूत्वनूपिहं वासीककाहं च वा वाधिविरुं मूत्यादयदेवलिस्वरुं लसूत्वावत्यानवं कालस्व
 नूपकं वासं वस्यनक्षत्रादवसूत्वावगीरिहादिगं वा वृक्षानां वाधिसूत्यानां वाधनं वरुक्षत्रिहं वा व
 मचगुससानिचिहं वा वं मचगुससानिचिहं वा वं मचगुससानिचिहं वा वं मचगुससानिचिहं वा वं

[illegible]

नखरुवृक्षानकभयगगो गृध्रगुक्षुकिक्कयानसंखके ४॥ मृगं जिह्वा गुग्गुलु मधुनायव तस्य वेगकय्य
भवतवात्मा सुखं नैवात्मा वृषिर्धर्मो गगसा सोख्यं मदा मृदा संस्ति गाता रिमधुल गगसादि स्वरा वा साधीनि
वृद्धे ४ पुकल्ये गागसे वरु गवगीय पुङ्गु उय न्नकुमया गत न सादी यान सादु स्वावत न्नगुन सान च गुला
वास्वाद गगन सागी गा स रुजानन्द का विधी ॥ कस्या मृत्यय गयीगी तस्या ४ सोख्यं ननु किंच गगया सादु
रवत्सिद्धि मदा मृदा सुखं ददा गगन्यं शब्द स्या गगल्य च सम्यक् सत्ये वच ॥ धर्म वा गुस्वरा वच्च पुङ्गु

४४

ये वा यजुक्त गगसे वस रुज स्ववृषाम् मदा सुखादि वा यागिनी ॥ सेव मधुल वक नुपे के इजान स्ववृ
पि ही गगसाद ह इजान वृषासा सम गो इजान राविनी ॥ सह मय एव द्वा व गगल्य नृच्छान सेव गुगु वि
शुद्ध धर्म वा गुसा से वारु म धुला विष ४ ॥ सेवने वात्मा यागिनी ४ स्व नृयं धर्म वा गुकं गगल्य जगद्गु
रु ॥ ॥ वक रावनामा गवद वगानां यत्थमदयं गगल्य वगा कथि गयुर्व सम्यक् कथय स्वम ॥
र गगानाद ॥ ॥ यामि न्याद ह म ध्व संज्ञका व सम्यक् स्ति गं गाय था वा अं गथा ध्व सं सम्यक् गय

काशिरां रावा लसो र्वां म हा मू दा व जा य त नं मू दा य कं रा भ न या गु घ स मा य त्या वा च दं दं नि द क्षि रं
रा वि का यं द ह म भ नु व क नृ प क्ष क थ गे रा वि का य स्य प वे ड्डा नं व कं म हा स र्व म रं रा ध म्म स म्हा ग
नि र्मा नं म हा स र्व व त्थे न च रा या गि न्या द क द ह म स क वृ ग य ४ का या वा वी स्ति ना ४ म ज्हा षा धं गु स त्वा
धं गु स त्वा धं य गो त्प रि ४ य मी य ग रा ग नि र्मा ध का य ४ स्था नि र्मा धं स्त्व व नं म रं रा ध त्थ य म्हा
नि गी य गे ज्ज न न नि र्मा ध कं म रं रा ध म्म च्छि गु स्व नृ प नु ध म्म का य क द व न रा स रं रा गं नु ३ नं य कं य

धृतिवचसन्पिष्टं गकच्छ स म्हागचकमहामुखं चित्रसिद्धिगं गानवं कायचनिष्ठं विषाकं धर्मच
 केगशापुत्रं च स म्हागोवे मल्लं मुद्रवचकुको गारु संवगुविधंपाकं निष्ठां द्याधवि रदिगं गकर्मगुगल
 गवगीपुष्टा कर्ममानुगवादिग गायथमकु गंगथा मुकं निःस्य न्दङ्गीति सदिगं गविषाकं गदिपर्यासं
 कर्मध्वल्यमरुहं लं गपुत्रकायमुपाऊनं वे मल्लं यागशुद्धिं रू लं गसुनावलीनिष्ठां चकगुनिष्ठां
 स्थावचं यगशासकं सिद्धादधर्मचकायधर्मावागसमुद्रवशा संविदी संरागचकचकच्छ संवेदनं य

ग ४ ग म दा म पी म हा स ख च क व म दा म खं कं स्मि न य ग ४ ग नि का य का य मि र्प कं म्द वं वि हा व म्द ग ४
 वी ग ना ग म र व आ गि ड ला य क ल वी व वं ड पा थ्म यी ग थ्म ऊ न नी व न्द नं म रु का थ्म लिं ग हि दा प दं ड ग ल्क
 र्यं म नु जा प म द ग ग थ्म वा म्का वं य गि नी च क स्य द का वं म दा स ख स्य च वा जा वा रि ध्व नि न म नु न ग न ४ हि व
 म्दु म्दु म्दु ग ४ आ रि ४ साम गि रि ४ स त्वा व्दो ऽ व न मं स य ४ र म यो द न मा मा स्च स त्वा द न र मी र्ध
 ना ४ ग थ्म स र्वा द व र्था ने ना त्म यो गि नी य म्दो ४ ग थ्म वा ला च ना मा म की य पा धु वा व ना मा च रु क्ठी च च

४७

च न्दा च प धु स व वी च क दा स र्वा च ॥ ऽ वं य म्दो ४ म म न्द व मा ण्क ४ समा या गि न्य ४ प व म वि स य म
 मा प ना ग च नां ग वं गी धु त्वा म्दु ग ४ सं ग स्ता म्दो मी य ति ग ४ ग न न पु फा ४ ग स र्वा द व नी द त्वा सं स्ता गि व
 जी प न न्क य ना य व ॥ वा कि गि ड ला य व द न्द ग ४ स न द ग ४ म्दो नि द वा स र्वा द व न के मि ग ग म्द
 जा म्दो नि द वा स र्वा द व न के मि ग ग म्द ॥ स र्वा द व न के मि ग ग म्द ॥ स र्वा द व न के मि ग ग म्द ॥
 स त्वा व्दो ऽ वं कि नु क म ला व ग ४ ग म्दो व क र्थ ना स त्वा व्दो ऽ वं न सं स य ४ ऽ व म ग द्ग व न् स र्प न

[illegible][illegible]

नेवनाथनवलाली के गये व वराचसा नी के गायय कसम दधम विष नी गराभा समा यलो सिंग दवद
 वऊ वऊ धमि ही गगय पृच्छा निने जात्मा सत्ता थय मदा वलिं गे न वंका व समा सी ना वऊ सत्ता दि लक्ष्मि
 गसत्ता नां पा ध व द्वाय विघ्न विनाय का द पि ॥ उं ह न दे ऊ मे ऊ ले ऊ क र ग व नि वायू व द व द स र्थ मा द य
 र्थ ग ल पा गारु ल म द स र्थ स्वा सा ॥ उ वं व लिं तुं ऊ जिं च रू ल ध प मा ता विं च म् न का ऊ स र्थ सा ध व नि
 स्व दि रु द ग म द वा उं अ का वा म र्थ स र्थ ध र्मा सां मा य न त्प न त्वा न् वा उं आ ४ हू हू स्वा सा ॥ अ न न व लि ना य

४९

दि स र्थ र गान ॥ प ऊं य क र्च नि चुरा य या गिन ॥ रा व रु द ग म स र्थ म ना वि लं द वा च गु ष्म नि ज ग त्स
 रु ग य १ व र्थो रि वा नं नि प म न्ना ना ध नं उ चा ठ नं मा द धा क र्चि च व र्थो नि स र्थ यो धि कं रा व र्च ॥ द या द्ध मि
 यदि रु र ग ग म्मा य १ च र्च ॥ ॥ व ऊ ग र्छि म्मा रु ॥ ॥ ध व नी क न मू द ध र व नी क स मू द ध न १ ॥
 क र्चि म्मा र ग व न्पा र न ह न गं म या प रा ॥ ॥ रा ग वा ना रु ॥ ॥ नि गु र्च व र्च म ध गु का य वा वि
 रु र द ग १ ॥ अ र्च म ध म र्छ नं व क म धा व रि गं ॥ रा व नी य म्दी स्या द ध म् र्चि का य व जि ही रा ध व नी ना ग

मदीचउर्ध्वसूरीवाग्विधीविह्वजीवनेवासाविलनेवासावयकं॥विलसथमकसुननेवासागनमथजा
गकुलानिषट् विधान्याहविस्तत्रयुकाक्षयनगिनिधंयैवविधंयैवकथ्यगेमुद्योगिनीगजक्षायवेमाव
नचत्तसकृदामिमायराभायसिद्धिब्रजसुखशास्त्रभाहपिहूनवालाउनीष्यसोत्तंयमुद्यनयाक्रममाहिताव्या
शाविलायवेजसुखाव्यंयैवस्यैवविधंकुलं॥गदन्यानिगेविधंभाहद्वयभागके॥कुलमकनुचिह्नसमक्षा
त्यद्वयचयिधं॥द्वयवजपुलावायकुलंयैवयैवकंमनं॥हवजसर्वगतुमूदहंपिधुर्थातामचनुर्थपठलथा

गजथवजीमहाबाजाहवजसर्वदश्यगुशासर्वाकावस्वरावासावधुलंसंयुकाक्षयन॥सूत्ताव
र्यासमासीनसर्वाकावस्वयपग॥विलंठजस्यवीजननिष्यनामधुलस्यवशाधोउसगुजमद्यैवगुपु
ज्यत्रहंरयानकाकपात्रमालिनवीजंनेवासाहिहिकन्धवंगायकैमूदाध्वनंदवंनेवासापृच्छगिस्वयं
गजसमयकंत्वयाकाथिगंयैवदक्षपविवाचिगं॥सुदीयंमधुलंकीहकंपाग्नहागंमयापरावम्वयित्वा
तुनेवासादिपावजंकपालक॥मदीयित्वासुनन्दधामधुलंसंयुकाक्षयन॥वकंयैवययकाथिगंहागर्हहाव

लक्ष्मिगंगा चतुर्धा संवतुर्धा वं वज्रसूत्रं वलं कंगं वागुमत्त्वहं विद्यागत्वा सा र्धव ज्ञाननं वा मदाय गान्वा ला
 नमस्तु जानन्द स्वयं गङ्गा जलं ह्यं वतु च्च व नगुज उषा उ नरुषिगं वा चतुर्मात्र समाक्रान्ता रयस्यापि
 रयानकं वा मुमुमा ला कृ ग दालं सूर्यसं गा धुवान्तिगं वा विष्णु वज्र धनं मुर्ध्नि कर्षु वधु रयानकं वा हं वा
 वं रदा वयत्न मत्वा गुरु स्मा दु विग विगु हं वा न वि द्दं समापनं नै वात्मा सह संपूठं वा निरु वज्रं सुखा वाक्यं निरुः
 वज्र स्वयं पिष्टं वा मुसमं मदा कृष्णं दक्षिणं वन्द सन्ति रं वा वाम वक्र मदा रीमं मुर्द्धा स्यं वि क जालिनं वा चतुर्धु

विंशतिनं गा यं ह्यस्यारुहसन्ति राश्या त्वयामयाय प्रवम्यकीलिता रगिनि रुपे निमिषेन्दुदिवो मयी
 घृष्टा ययसि र्गाश्या मरु मरु न या तान यो विकानि ४ मुगायून ४ गानि ४ रुगदक्षि ६ वा यो मी द्या यया
 त्रिका गावालक कालया तान ध्रुवा नीनि ४ मुगायून ४ निश्चि र्यय पश्चिम द्वा प्र निष ह्म मा न रु ऊ नी गामदा
 दन्द समाय स्ते नि ४ मुगायून ४ मनीयून ४ मुर्य उरु प्र द्वा प्र निष ह्म द्वा ययि धी गाय द्यो यय द्ये स्या गम
 नि ४ रुगायून ४ सि यून ४ नि ४ रुय र्वज्ञान का ह्य स नि ष ह्म यो दय्यि धी गायून मरु न या तान ह्य वी

पात्रककोषक वा च धुली वा दसमस्य भयं भूमि मीनं गकोषक वा गभा वजीमदा जगद्गुरुं रंगं सवि
श्रया दयानि गभाया नानागी गोपदा वग ४॥ ॥ उरु र गभा क व धम धुयु क सिम दू प वि
नादिं सदा स्रज्जल काम मकं कुरुदि स्र ह्म समादि वा गो आ वि दू धुम व मि दू उ द हिं गु हं ह व ऊ च
उदि स्र ह्म सला व ऊ ज व जि म्मि सि आ ग क ऊ गला अनि म नि म्म स्र व प ह्म स्र ह्म क सि कि स हं व धु लि वि धु न मि ग उ
वि न्द्र ह मि न दी स ॥ ३३ ॥ दी ज्ञा सो उ द गु हं ह स्र जा ध मि रु ह वि रु ४॥ अ रु ग म्मि क म्म धु मा क व क न्ध वि दि रु ॥

हस्य ह्यवव गभा व ह्म म न्द्रा स व र ग क लु थ ग द कि धा ह्म क या ल य क मे इ या दि पा द य ४॥ य धि वी व न्ध वा य
ध ग उ ह्म दार्क य व र म्म न्द्रा व न द ह्ये व ॥ वा मा ह्म क पा ल क ॥ धु ज्ञ व वी व वि रु स सो द हा स्य र यान क ४॥
क न्द्रा धु ग ह्म नो ह्य न व ना ध न मे य ग ४॥ अं हूं र्यां म हा व जी उ ग द व म्म र्गि न धा व र धा न स्र न य न र म्म न्द्रा
य न्द्रा स्र न्द्रा न्द्रा गं चं वं वं वं वं वं वं वं ॥ वी ज्ञे म्म रु द्वा सा अ धि प ति न मि वी का र्यां ॥ हूं हूं र्यां काला क
ल नी ला र्यां मा रु च क प्प न्द्रा म्म र ग व य दी ह हं य गु ॥ क रु व र्धु म हा धा न्द्रा न्द्रा सा स्र व द य कं ॥ अ यी द कि व

गकारिचवसवावादिगथावाक्योदं दक्षि (ह) यो यो वामपक्षव नाह कं वाधला ल्यादक्षि (ह) कर्म वाम
 पक्षलाननं वाधसमर्थी दक्षि (ह) सूर्य ४ वामनयावायि का वायुर्का र्यादक्षि (ह) सिंहं वामपक्षसूक्ष्मवाधवर्था
 दक्षि (ह) शिखरावामविद्विचिकागथावाका धुला दक्षि (ह) चक्रं वामला न लंगथावाका न्यादक्षि (ह) वज्रवमसु ३
 वगर्जनीसूक्ष्मवाधपयकनायसूक्ष्मलोभ्याद्यादिगुजामगावागिभ्याउर्ध्वकसावयवेमडाविरगाहककुर्व
 ह्मिरव (ह) जीवी जीवीमार्क वुसन्निराशावलालीगफह माय वाधसमीमवकगायमा वायुर्कसीरुन्दनीलारु

लववीचन्द्रमक्षिपरावाचधुलीचतुरं क्षमो शम्बीनीकर्बू वामगावाधस्तदापत्युन्दाश्चवेवस्वगवि
 नायक ४ वा नेम सूर्यवमविशीचलोभ्यादीनांगुविह्वं वावालकं रुषयित्वागुरुगवतपूज्यरकिग ४ वा नेमा
 लापृच्छ गमनं गमनं लिङ्गनचम्बने ४ वा मीधं वल्यकचं मनुंदूषा नांगर्जनं गथावानागक्षपकचं मनुंदवास्
 यविमद्वनं गगदहं कथयाम्यममृधूदवीसूर्यदक्षवृद्धाधिसत्त्वमयातानागदक्षिगं वाधसमनुस्यय
 हूगं वरुसत्वनयत्कनं वाविहमिम्गनादवीउम वाधसत्त्विकथनं वाधसुलं वरुयित्वागुकात्तामा लाक

बालिनं गजं शिखं वज्रं गरुडं दानकं कर्कशं गिलालमा ॥ गायं गजं जयं नयं सुनदीं र्धनाद नवा नृत्ता गह्वरं जयं ग
 यं कनकं कव्यं कसर्वं यं विरगं लक्ष्मं जयं नयं गमन्मा सर्वं कर्कशं कयं र्धनाद नवा नृत्ता गह्वरं जयं ग
 नसा गह्वरं दानमादिमं वै वाक्चन्द्रं विन्दुं रविं गायं रश्मिं दक्षं नयं नायं गिरिं वल्गुं र्धनाद नवा नृत्ता गह्वरं जयं ग
 नृत्ता गह्वरं जयं कर्कशं जीमूतं वयं कयं कयं लक्ष्मं लक्ष्मं कयं विरगं कयं र्धनाद नवा नृत्ता गह्वरं जयं ग
 वयं र्धनाद नवा नृत्ता गह्वरं जयं कयं कयं लक्ष्मं लक्ष्मं कयं विरगं कयं र्धनाद नवा नृत्ता गह्वरं जयं ग

५७

४८८ स्वाहा वागु सुखे सुसाद वीम म्म म्म न या ग रा १ पु च्छ ग म सु लं जं स्यं ग म दालि क न य म्म ने १ सा स्ता गः
ग म दालि नी म धु लं लि वि ग म्म यं ग क ज य म्म मा या ग्म ग्म वि र्क १ स मा दि ग्म य्म ड म्म कं व ग्म द्वा वं नाना व म्मि स
मा क्म लं ग व ग्म सा द स मा य्म कं व ज्म सु गे वि र्क वि गं ग यं व ज्म स्वा स मा य्म कं म्म क्म क ल म्म म्म म्म लि ख ग्म ग्म य्म के व ज्म
म ये च्छ न थ वा ग धु ल का दि रि १ ग्म म्म म्म न क्म ना पि म्म म्म न क्म व के सु थ ग्म ग्म न्म म्म गु लि त्य म्म म्म य्म
ग स के म्म वं ग य्म क्म व लि ख न व के धु क्म व च्छ नि ख धि नं ग्म न्म म्म पि लि ख ग्म स व रं रि क्म ना य्म य का द क

गवकुंलिखनेपाखां वायवांक्लिशंलिखन्वायवृद्धाभगथकलिकुपीटंदक्षिसलिखन्वायविमलिगुक्कु
ममृजगत्वेअनुभगथमदवीनांवर्धुलेदनादचिद्रंयकीरिगंगामत्तमृकु कलाठयेविचववजांकिर्गैलि
खगगाविजयकलसंगगादयात्यल्लवागुंस्वस्तिहंवायवेरत्नादवंदिवंमालिअरपविपुविगंवाकिंवद
पलायनयथगतस्वगदमधुलविधिसुथकल्वंमधुलवपुवद्व्याविद्यावाक्षेमहासूत्रभावाद्दहम
द्यादिवव्यवर्तननूपवराविनाशाजननीरुगिनीनेवइतिनालागिनयिकागामानुलस्यगथार्यामारु

रुगिनीवच्यसुका॥पिनुरुगिगथयेवाक्षविद्याभायकीरिगाशासांपूजयथागीगमचालिजनवृम
नेठकय्पुवंपिबेरुगमधुलंपोद्वहंवागासांयाययथागीलचसिद्धिमवायूयान्नामदनंगुयागव्यंराक्ष
गुवलिसालिकंगवेविबकुंकरुगममयमरुमरुभागरिच्यवगवाल्मीयगनृयगयवचीमकी
जयवियगगगवालककालयागगभायमसदिगीययद्वेक्षिषांमययवचयिन्वाज्जिद्विपुकायव
रुहायव्यालधुलंदर्जनंवासरिषकदीयगगगतिशीत्यविजनगृहवायथकाथिगास्त्रारिषकोण

वाय्यादिपुष्टदग ४ गमुनि पूजाय अन्वा गा यु गु न्न यं सन्निष्ठा के ४ ग ग ल्यं व द स य रु ग विलमादिप वमा
दिकं गातापि गं सर्वं गतु स न स नं यु का सि नं ॥ ५ ॥ ग ग ग सा द वी व ऊ यू जा य या ग ग ४ ग ग क वं की ट सं द
व क थ य स्व म हा पु रा ॥ ॥ १ ॥ ग वा ना द ॥ ॥ ग म उ न म न क न म क्का ग हि नं उ र व न उ नि र्वा षा ॥ ५ ॥
रु स्व य व म हा सु म उ य व न उ म्पा द ॥ ॥ स्व स वा ग वा या ह म्पु वृ द्धा वा न मि का व या ॥ गा र्यं पी उ य आ गी
स म्हा लाल द नि द यं ॥ ५ ॥ य स्व द त्य अ गे इ नं क् मा बी सू व ग वं य थ कि स प्पु ल य गे ग ग म्क स्य स्व प्रं य थ

य व मानं म च वि व म स्य मु न्ना मु न्ना नु द व कं ॥ १ ॥ व ऊ य द य ४ ॥ ॥ ५ ॥ ये के म ४ य ट ल ४ ॥ ॥ १ ॥ द वी वे ग
४ मालिं स्थि ति स्वा वा ल कं या ल कं ॥ ग म चं क् च ग दं क् स्या स द्ध य न व ना सि कां ॥ द नै शे ना ह्म मा पी य व ह्म क्त्वा न स्व
रु गं ग स प्पु टं सो ग्वां मा सा य ये के म्पु डा य का न य ग् ॥ गु व वा वा र्य व्द व स्य न म ना थं च कि का धृ गा ग द रा व स्या
सु व द म्पु गु वा व ऊ ध व स्य व ॥ सु य द या ४ क् धु लं क् म र्थ म न्तां क् फ रु के क् छि का नू च क ४ या छि व धं र्य कं म्पु डा र
जि रुं व म ह्म लं ॥ ५ ॥ ये के वृ द्ध स्य म्पु ड द म्पु वी वं म्पु दि न स दा ॥ ५ ॥ य द म न के ग ग ४ क् ला द नै ४ स पी य वा ध नं ॥ ५ ॥

कुरंगगुसादवीहवजं सरुजरीपिमं गकगवधविधननकयाक्रियागधपरा वाहवजस्य पटं कार्यकथयस्व
महासूत्रवा ॥ रागवानाह ॥ वासमयीत्रिगुकत्रहनेसाधकनापिसमयीना ॥ लिखितगव्यं पटं
ध्याननवक ॥ १ पकेवधुकेशासायकज्ञस्य कूर्चवलिनीयं पटं गुग्गुलु ॥ सुगुं वयया कार्यकुरुव्यके पटं यया
गवापिसमयीन्मावेमयाधिका नयागग ॥ मासिमासीवगुदृष्टं कुरुयौ विजनेगुद ॥ सध्मद्वैकवविश
नकिंचित्मदनयानग ॥ १ ॥ निर्वं शुक्लरुत्वातरीरयसुथायन ॥ ३ ॥ सूक्ष्मनापिचिगुधराक्षयसमयंगग ॥ ४ ॥

नमोऽं स्वाप्यवामेनचात्रकुकुपावगीगान्पयोवनसोराग्वंसूय्यांसाधकप्रियं वाहवजपटले ॥
विधननपटल ॥ ४ ॥ म ॥ ४ ॥ गंमथदगगसादवीवालककालयागग ॥ ३ ॥ उं दनानसुपीयाकरमंरा
वगिपसूकं गावजपञ्चसमायागगुक्षादव ॥ ४ ॥ यकासगग ॥ रागवानाह ॥ वाहवजपटले
रावायसूकं कयौथेस्यदं गार्जयगुलिखितगुसमयीद्वादसाह लयसूकं महामध्मसीकृत्वा सवन्त्याम
नृषास्तिरिथायसूककेकेपठयेवयवाइजयपद्यति ॥ ४ ॥ दृष्टमनिनसिद्धि ॥ ४ ॥ नयनसाकजमचनं गसं

पुदाययूकस्य दर्शनं के कदाचिन्नात्मपिगवां कच द्ययसूकमध्वसत्रयवा राजालिङ्गयुगिस्त्वायाच
 स्वयित्तामूर्द्धमूर्द्ध ४॥ मदासूवंसमासाद्य वजीरै रोनमादिज्ञाग ॥ चूचूदवीविस्मलाक्षिराजनंगधमधुले ॥
 यगनुकंरवसिद्धि ४ सर्वकामार्थसाधकी वास्मत्तानगिचि कजे वामानूषयनगथमवाणधवा विरुनसमूदा ५८
 न्कुरुदंराजनमात्ररगु ॥ कस्ययदासथगगनत्रात्वांशवन्पिचं ॥ अथवा वायुचर्मवेस्मत्तानपटंगथ
 मत्तद्वदवज्रव्यासायागिनीनांगनान्यस्यगु ॥ स्त्वनइहायथायथापूर्वदिक्षस्त्रिविदिक्षस्त्रयायुचर्मपि

मुज्जंजीगसमयस्यमात्रगिन्वनं ॥ रद्वेष्टेरक्षयलुग वाजस्मल्लिंययत्नग ॥ ७ कृणु कृणु नरुगयुक्कन
 यमायत्र ४॥ यदि वामागारगिनीत्या क्षगिनीयौवस्वरा ॥ ॥ यजथ निरुजं गामां सिद्धकवा धमधुले ॥
 उकारवधुंमदानवकंदिव्यंमदनं प्रविर्गं ॥ गुत्रवदयात्मदाएतावदयित्तास्त्रयं चिं वगुगृक्रियात्तमहसू
 नदया रेववपाहिनामूर्द्धमूर्द्ध ४ यधममेकैर्द्विगुणसाधका ४॥ राजन ॥ वायटल ४ सफम ४॥ ॥
 नगपृच्छनिपागिभ्योमहामूढागुकीदृष्टीसंवृत्तवाचनूपेक्षकथयम्बसूवंदद ॥ ॥ रागवानाह न ॥

नागिदीर्घा नागिक सावनकृष्ण नचले वि काय न पय नि रा का वा ४ च्छास ४ ग स्या ४ स गान्धर्व काय ख द
 एवत्सुगस्त्रि मृग ना रि सम प रं गाय न च न्दी व वं ग न्त्वं क्षा त्प न्मि वा च य ग रा क र्थ्य व सि द्धा या सु स्या
 ४ स ग न्त्वं लक्ष्य वृध ४ उत्प ल य ए व ग न्त्वं वा य सा गु न्त्स नि रं ग धी वा जू च के ला वे व पिय वा दि नी म
 ना व मा वा सू क क्षा गि व सी म थ्या पा रु ग ४ प मि नी म गा गां या य ए व सि द्धि ४ स स जा न न्द नू पि सी ग म् थ ह
 ने वा ला या गि नी ए ग व न्त्पु छि ध नं की द स क र्त्त वां ॥ ॥ रा वा ना ह ॥ ॥ कृ ज्ज मा नू ज्ज मा

५२

नू ज्ज मा दी स मयी दे व ज द क्ष क ४ ॥ कृ पा वा नू गु नू र कं च्छ र व यं न नि ज्ज न नि ॥ व ज्ज च्छ व द ता धि ग
 की व ध म्म या ४ ॥ या पि नू क स मा हा वी र व यं ज्ज न नि ज्ज न नि ॥ ग ग स्त्रा क्का स सा द वी र य व च न स पु
 वी गा दू र्वा ना दू र्वा ४ स त्या वि न यं जा ति क न हि ॥ ॥ रा वा ना ह ॥ ॥ या व धं दी य ग य स ग
 द नू मि क्षा प दं द स वे रा वं ग रा द स्त्र ग स ग कं पू न स थ ॥ या ग वं ग ग ४ प च्छा ग्ग द नू ध म का दि ध न
 ग स र्व म नू न य ज्ज ता ग द नू र व क मा व र ग्ग गृ क्षी या न सा द वं मि थ्यं सि ध गे ना ग सं ज य ४ ॥

५

विनयपटला। नामा ४४॥ ॥ अथ गसंय वक्षामि संपूर्ण विगल क चं राय न वि हन मा ग द सा
 घ कं सिद्धि मा पू या ग रा हा ध स्य ना रि म स गुरु स ना ला ट य दु गी रा द न क य नि नू प धा धा ग क व र ग सा रा व द
 क्ष मा ग क त्तो व वृ द्धा पि न र्ग ग क र्वा मा न चं क्रिय ग क य या धा व रि त्वा गु नो म नो रा धा स ना य का नी च गु नू
 वृ द्ध ना श क स थ रा य त्त्र द द्वा य धा नू प स थ मू र्वा गु रा व य गु रा व क मूर्ध मं गु त्त्वे व क म्य य नं मूर्ध जं रा त स मा
 त्म स वी क्षा या नू प वि क्षा नि व क्षि नू पि क्षी रा द द य द्वा ना स नं वी जं द द्वा मा न य र द्वा धा ग रा ज स्मि न् ग क न द्वा रा यं

मू द्वा वं ध क्रियान व रा य ठि ग सि द्धं म ह्मा म नं ध्मा न मा ग धी सि ध्वा ति रा न द स्यं च र मं व द्ध नृ च द वी व रान न रा
 रा व स्य ल्हा ध नं व स्य म वि क ल्यं सि द्धि दा य कं रा य च्च द वी म ह्मा न त्नां द्वा ला मा ला क लं व प ४४ अ या ता ४४ द वी
 क ल्हा ध न ४ वि द्ध ४ स नू वि दा य क ४ ग द सं सा न वं न त्नां प के का म गु लो य ग ४४ अ वि षु द्ध वि सू द्धि गां या गी वि द्ध य
 नू प द्ध वे ग रा सं सा नं द नू का का नं र ग दू र्वा न धं य गुं रा य न नू प धा स र गं ग द स वी म च्च रां रा क य या ला च न व क
 क क्वा र्ग म मे ग वि र ग ४४ स गं द व मू र्वा गु क धं च च त्वा न व न धा ४४ स्म रा ४४ अ धा र्य वि मा द्वा द्धे नू न रा धा ग न ग

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ अथ श्रीकृष्णार्चनम् ॥
 कृष्णाय नमः ॥ १ ॥ कृष्णाय नमः ॥ २ ॥ कृष्णाय नमः ॥ ३ ॥ कृष्णाय नमः ॥ ४ ॥ कृष्णाय नमः ॥ ५ ॥ कृष्णाय नमः ॥ ६ ॥ कृष्णाय नमः ॥ ७ ॥ कृष्णाय नमः ॥ ८ ॥ कृष्णाय नमः ॥ ९ ॥ कृष्णाय नमः ॥ १० ॥

वर्द्धाद्विपदं दत्त्वा गदन् स्वचरित्रिकां गतं ४॥ स्वादानं निश्चिजिगं कृत्वा वृद्धा अपि पत्नी कथं गवाय दन्दानं मादिसं
दत्त्वा पथमस्य दिगीयकं गसन्नं न्यं स्वादानं याजयन् पाह्ना वृद्धानामप्युच्चाटयन् गोजा दोषे वाचनं दत्त्वा द्विः
गीयस्य रू गीयकं ॥ त्रयं कं वाचिरुषितं मधुनं स्वादानं संयुक्तं ॥ द्वाय सर्वमानूषान् वायुमथमं वर्द्धा स्ववन्दत्वा
पथे मस्य रू गीयकं ॥ चतुर्थं जाके नीयकं स्वादानं मारि वाचूकं ॥ वर्द्धा जं यूनदत्त्वा ह्मं काच वक्तु सति र ॥ स्वादा
नं माक र्षय गायकं स्वादानं मारि वाचूकं वा वर्द्धा सद्यस्यं वल्हादिनां तिला रुमां ॥ अथ दोषा ह्मं कूल दत्त्वा पृ ४ काचं संयुक्तं

जयगा स्वादाकं पूनः कृत्वा मातृयगसूत्रमानूषान् पायमेधेस्ययथमनु वज्रजकिनीयाजिगंजा दोवे वाचनं द
 स्वाभनस्त्वनादिगीयकं वा वज्रजकिनीसयूकं पूनः यथमस्यायं वज्रजकिनीसंयूकमनस्त्वनाद्यगीयकं
 नयूनस्त्वनेव संयूकं उपविशो वी विरुत्तवगं गदोः का वं यो जयगुदनस्वादाकं पूनः चानयगुगलकृत्वा मनु
 उं का वादि वगुर्थस्य रगीयं चो वी विरुत्तवगं गदोः का वं यो जयगुदनस्वादाकं पूनः चानयगुगलकृत्वा मनु
 पूर्वसी विरुत्तवगं गदोः का वं यो जयगुदनस्वादाकं पूनः चानयगुगलकृत्वा मनु
 पूर्वसी विरुत्तवगं गदोः का वं यो जयगुदनस्वादाकं पूनः चानयगुगलकृत्वा मनु

५२

वाचनादि कृत्वा कृत्वा याजिगं वापे के मस्य वगुर्थमनस्त्वनायथमनयूकं च समवीरुत्तवगं गदोः का वं यो जयगुदनस्वादाकं पूनः चानयगुगलकृत्वा मनु
 गुर्थकं वज्रजकिनी विरुत्तवगं गदोः का वं यो जयगुदनस्वादाकं पूनः चानयगुगलकृत्वा मनु
 कं वा वगुत्तुजस्य मनु वा वे वा नादियथमस्ययथमस्यनत्रतो वी क्षारिगं वा रगीयस्ययथमस्यनत्रतो वी क्षारिगं
 वादि गुची कृत्वा यथे मस्य रगीयं द्विगीयस्य रगीयं स्यं वं द्वि रगं द्वं का वं यो जयगुदनस्वादाकं पूनः चानयगुगलकृत्वा मनु
 स्ययथमं स्वादाकं वज्रजस्य मनु वा वे वा नादियथमस्ययथमं रगीयसंयूकं वज्रजो विरुत्तवगं गदोः का वं यो जयगुदनस्वादाकं पूनः चानयगुगलकृत्वा मनु

दि २

नीयकं राद्यस्मनीरुषिगं यथमस्य यथममनस्कस्वनाय यथमनयूकं वजारुषिगं ॥ कृत्वा वं श्रीरुषिगं ॥ यथ
 मस्य यथमंडव्या धं वगुर्थकं वज्जगं केन रुषिगं ॥ श्रुत्वा जानं गिगुषिगं रुद्रस्वाहानं दिगुजस्य नेनामाय य
 मस्य यथनं शादिगीयस्य यथमं रुगियस्य यथमं वगुर्थस्य यथमं यथे मस्य यथमं नस्कस्वनां यथमंडव्या धं य ५३
 यथमं वे वावनादि स्वाहानं पूज्य कारमकुल द्वाका य ४५ नस्कस्वनां दिगीयन्तु द्वाका वदयं मत्स्य पून वनस्क
 नां दिगीयन्तु द्वाका वगुर्थ वे वावनादि रुद्रका वविदिदिगस्वाहानं रुमि मधनमनु ४॥ वे वावनादि गदनूव

जाहं का वानं नपा नां धिस्व नमनु ४॥ वे वाव नादि गदनूव का वाम वंडव्या धं रुगीयकं नस्कस्वनां वगुर्थ
 कंडय विवकि रुषिगं वमी धां गदनूव जा वाक नृत्य त्रत्वा गूं जं जा १ रुद्र स्वाहा ॥ सर्व लो गिक वलि मनु
 १॥ गमना द्वा नय टला नव म ४॥ गगना वज स त्वा ४५ सर्व धर्म क सम्व नने नात्मा च स्वयित्वा
 मुजाय विषय यका हा ग रुद्रिकं न रुद्रु नं जा यं व द्वा व व क व न्द नं ॥ विदि कया रि वा न्कं विद वं नि
 वं शु के रु धा गो उ द्वा ट न म ह्व रुद्रु ना क र्म धां व मा रुद्रि ना ॥ व र्मा य धं गज नि वं शु के ४ मा व धं म दि म स्य न

गस्तुननेक्षीनपाननु वक्षस्व द्युन्दमाचयगुगामावक्षसिङ्गकपाकं कक्षे चगुशिवेदमधमक्षालिजं चैवोड
जाटनेकनु कास्मृतां गौशथवाग्नक इयमादि इयचनाविरादिगर्थेवच ॥ १ ॥ कायपठलानामदक्षम ॥ ४ ॥
॥ गगमक्षालि र्वं ह वक्षसं पीष्टाभ वंदनके ॥ १ ॥ नेनात्मापृच्छ गगशदहिनां कुलनूपयकं गगलालिङ्गं
यनिष्ठाप्यङ्गीर्यादवकनायक ॥ १ ॥ दहिनां स्वकुलं वक्ष्ये प्रज्ञाया अमिगं धृष्टो अनामिका मूल केयस्य स्त्रीया वा
पूवस्य वागानवक्षुं रवक्षजमक्षायकुलमूलमं गवे वाचनस्य रवगु वक्षुं ममिगनाथस्य पकजं गजलसं रवा

महाजलं वक्षुं कर्मकुलस्य वगयादियागी रवत्कृष्णः क्षायस्य दवगा वायादियागी मदात्मो वावे
चोचनकुलदवगा वायादियागी मदाक्षमाज्मोच ॥ १ ॥ गस्य दवगा वायादियागी मदायिज्ञा वल्लङ्ग कुलदव
गा वाचकलोना वायागी अमिगारकुलदवगा वाक्ष्यमलोना वादियागी गस्य वजसत्तकुलं रवगु वाज्ज
वांना वमनवातदे विष्णुया रापावतो ॥ १ ॥ गथागगानां कुलास्तु नूपयमाक्षिर्यसां वनं गम्भीरं लक्ष्मीं वयथ
यं सिगल्ये ववगा सामयिकुलास्तु संवख्या वाचनूपयग ॥ १ ॥ गगक्षमदा वक्षी रगलिङ्गस्य च स्वनागवाने

बालां वाधयामासृष्टुद वीप्रपूजनं वाडयान विजुन दे (स) आत्मा गजानन व प्रव न गी कृ लय म हाम्दां पू
 जय शो ग विस दा वा वृ म्ब नालि जनं कृत्वा र ग स सं ग ल्ये व च वा वृ ष धं न व ना सा या ४ यान म वृ व म वृ स्य च ॥
 म दना कृ क रे ४ काम वाल वान कृ न स दा वा दाल या कृ य न भा पि स्य सा वि न के कृ था वाम् दू म् दू ४ काम थ दू गी
 अ द्ध उ द्ध नि वि द्ध म ग्ना पा प्रा नि वि प लां सि द्धिं स च वृ द्ध स भा र व ग्ना क य् यं पी य ग ग ग म द न (अ) व वि (अ) ष
 ग ४ व ल स्य र द्ध धं स ग्ना क य् यं वृ द्ध गु ना वाम् दू जार्थ य ग लाना मे का द स ४ ॥

५५

मज्झिम निकाय सूत्रेण

सिका

४ क थ यामा स च म दा वे जं म दा य धं गृ द्ध व जी यु नि वि षि ग ॥ व ज्ञा चार्य स धे व कृ ल्प हि ष्य स्य सं ग दं वा य थ वृ द्ध
 व मि तुं मुं सि च न्क वा धि पृ ग्ना ४ वाम या गु क्का र्थे व क धं सिं चि तु धा न या ॥ व नि दां सि द्धि दां द वी वि स वृ पाम
 ना च मां ग गृ द्ध गृ द्ध म दा स ल गृ दो ला यू ज नं कृ न् ४ दं ह नं म दा सृ द्धं व ज म धुं न रा य मं ॥ वि ज उ स कं भा द्ध दं
 ४ म क पि गा न ल म पि स्य रं वा व ज य म्मा वि षा न म न् ४ ५ य म्मा व म दा वा ग सृ वं द द च गु जान न द रां धि
 च दं दं दं का र्थ कृ ल्प म्मा व उं व ज म दा द व च गु जान न द दाय क र व ग सृ वं क ल सा ना थ दं दं दं का र्थ कृ ल्प

त्वमसि विमलमण्डितं चंद्रादिकं चंद्रादिकं चंद्रादिकं ॥

॥ मन्त्रावली जगन्माया कल्याणदीपिका ॥

॥ मन्त्रावली जगन्माया कल्याणदीपिका ॥

॥ मन्त्रावली जगन्माया कल्याणदीपिका ॥

॥ मन्त्रावली जगन्माया कल्याणदीपिका ॥

॥ मन्त्रावली जगन्माया कल्याणदीपिका ॥

॥

॥ मन्त्रावली जगन्माया कल्याणदीपिका ॥

॥ मन्त्रावली जगन्माया कल्याणदीपिका ॥